अनुभूत योगावली



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

अनुभूतयोगावलिः

(चिकित्साग्रन्थः)



इदं पुस्तकं

मैराष्टनगरनिवासि चन्द्रप्रस्थवनवारी लालायुर्वेद
विद्यालये परीक्षोत्तीर्णेन वैद्यभूषणोपाधिप्राप्त-
पदकेन वैद्य नारायणदत्तेन संग्रहीतं

भाषाटीकोपेतञ्च



मुद्रक व प्रकाशक

खेमराज श्रीकृष्णदास

मालिकः " श्रीवेंकटेश्वर " स्टीम्--प्रेस,

बम्बई.

संस्करण-अगस्त २००५, सम्वत्-२०६२

मूल्य : ३० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

समर्पण



श्रीमान् महोदय भाग्यशाली दीनप्रतिपालक सज्जनाग्रणी धीर वीर चिर प्रतापी "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेसके अध्यक्ष सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। आपने जैसा परिश्रम तथा धन व्यय करके प्राचीनग्रन्थोंकी खोज तथा मातृभाषाकी उन्नति की है वह सर्वसाधारणोंको विदित ही है और आप बडे धनाढ्य होनेपर भी आजकलके धनाढ्योंकी तरह अभिमान नहीं रखते गौ ब्राह्मणोंमें जैसी आपकी श्रद्धा है शायद ही किसी धनाढ्यपात्रकी हो। धन्य है ऐसे धर्मशील पुरुषोंको। परमात्मा ऐसे पुरुषोंका सदैव कल्याण करो।

मैं इस अनुभूतयोगावली ग्रन्थको सादर और सहर्ष आपको समर्पित करके इसके सर्वाधिकार आपको देता हूं, इससे दूसरे कोई इस ग्रन्थके छापनेका साहस न करे नहीं तो उन्हें हानिही उठानी पडेगी।

वै० भू० नारायणदत्तशर्मा.

मेरठसदर.

इसको अवश्य पढ़िये

सज्जनवृन्द !

यद्यपि वर्तमानमें आयुर्वेदके विद्वानोंने चिकित्साविषयमें बृहद्-ग्रन्थोंका साराँश लेकर बहुतसे ग्रन्थ नूतन संग्रह किये, परन्तु ऐसा ग्रन्थ कोई दृष्टिगोचर नहीं हुआ जिसमें अनुभूत प्रयोग हों और चिकित्साप्रयोग सर्वदेशीहों, जो औषधि लिखी होवे वो सर्वत्र सुलभ हो चिरकालसे मेरी यह इच्छा थी कि, कोई ग्रन्थ ऐसा संग्रह किया जावे जिसमें जो चिकित्सा प्रयोग हों वो सब अनुभूत हों एकवार देनेसे रामबाणकी तरह असर करे परमात्माकी कृपासे यह (अनुभूतयोगावली) नामक ग्रन्थ वृहद् ग्रन्थोंका सारांश लेकर तैय्यार किया है । इसमें ज्वरसे लेकर निदानोक्त जितने रोग हैं उनकी चिकित्सा वर्णनकीहै इस पुस्तकमें जितने प्रयोगहैं उनका सैकडोंवार अनेक विद्वानोंके द्वारा अनुभव होचुका है और मैनेभी खूब परीक्षा कीहै, क्योंकि, वृहद्ग्रन्थोंमें एक रोगके ऊपर अनेक प्रयोग होनेंसे यह सोचना पडता है कि, इन प्रयोगोंमें कौन प्रयोग उत्तम है ? इस त्रुटिको देखकर सर्व साधारणके कल्याणार्थ तथा वैद्यविद्वानोंके सुलभार्थ इस पुस्तकको छपवाना अत्युत्तम समझा पाठकवृन्द कृपा करके इन प्रयोगोंकी आपभी परीक्षा कीजिये, और रोगिजनोंको आरामकर धर्म्म लूटिये यदि कही इस पुस्तकमें अशुद्धता हो तो विद्वान् महाशय क्षमा करें, और मुझको ज्ञात करें ॥

विप्रपदरज,

नारायणदत्तशर्म्मा वैद्य

मेरठ सदर

अनुभूतयोगावलीकी विषयानुक्रमणिका



इति अनभूतयोगावलीकीविषयानुक्रमणिका

श्रीः

अथ अनुभूतयोगावली



भाषाटीकासमेत

मङ्गलाचरणम्

वन्दे तं परमानन्दं भक्तानामार्तिनाशनम् ।
ममापि संकटं सर्वं हरत्येव न संशयः ॥ १ ॥

अर्थ–उन परब्रह्म सच्चिदानंद परमात्माको प्रणाम हो जो भक्तोंकी पीडाको नाश करतेहैं, मेरेभी सब कष्टोंको दूर करें ॥ १ ॥

प्रणम्य शङ्करं भक्त्या भक्तानामभयप्रदम् ।
क्रियते संग्रहो गूढो भिषजां रञ्जनाय च ॥ २ ॥

अर्थ–भक्तोंको अभय देनेवाले श्रीशङ्करजीको भक्तिसे प्रणाम करके वैद्योंकी प्रसन्नताके लिये यह संग्रह (अनुभूतयोगावली) करताहूँ ॥२॥

परिभाषा

ज्वरादौ लंघनं प्रोक्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम् ।
ज्वरान्ते भेषजं दद्याज्ज्वरमुक्तौ विरेचनम् ॥ १ ॥

अर्थ–ज्वरके आरंभमें लंघन कहा है. ज्वरके मध्यमें पाचक प्रयोग करना चाहिये, ज्वरके उतरनेमें औषध देना उचित है और ज्वरके छूटनेमें जुलाब लेना उत्तम है ॥ १ ॥

अथ ज्वरचिकित्सामाह-

ज्वरस्योपर्यनुभूतकषायः

नागरं देवकाष्ठं च धान्याकं बृहतीद्वयम् ।
दद्यात्पाचनकं पूर्वं ज्वरिताय ज्वरापहम् ॥ १ ॥

अर्थ-यदि ज्वरमें पाचन देना हो तो इन औषधियोंका देवे—१ सोंठ, २ देवदारु, ३ धनिया, ४ कटेली, और ५ बडी कटेली, इन औषधियोंको छदाम २ भर ले काढा कर प्रथम ज्वरके पचानेके वास्ते देवेतो ज्वर दूरहो॥ १॥

अथ वातज्वरस्य चिकित्सामाह

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैः पाचनं स्मृतम् ।
दद्याद्वातज्वरे पूर्णलिंगे सप्तमवासरे ॥ २ ॥

अर्थ—१ गिलोय, २ पिपलामूल, ३ सोंठ, इन तीन औषधियोंका काढा वातज्वरके सब लक्षण मिलनेपर सात दिनके पश्चात् देवे तो वातज्वर नष्ट होवे ॥ २ ॥

अन्यच्च

शतावरीगुडूचीभ्यां स्वरसो यन्त्रपीडितः ।
गुडप्रगाढःशमयेत् सद्योऽनिलकृतज्वरम् ॥ ३ ॥

अर्थ-शतावर और गिलोय दोनोंको कूटकर इनका अर्क निकाल गुड मिलाकर पीवे तो वातज्वर शीघ्र नष्ट होवे ॥ ३ ॥

अथ पितज्वरस्य चिकित्सामाह

द्राक्षा हरीतकी मुस्तं कटुका कृतमालकः ।
पर्पटश्च कृतः क्वाथ एषां पित्तज्वरापहः ॥ ४ ॥

अर्थ–१ मनुक्का, २ हरड़, ३ नागरमोथा, ४ कुटकी, ५ अमल-तास, ६ पित्तपापडा, इन छः औषधियोंका काढ़ा पित्तज्वरमें देनेसे पित्तज्वर शीघ्र नष्ट होजाताहै ॥ ४ ॥

अन्यच्च

एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः ।
किं पुनर्यदि युज्येत चन्दनोदीच्यनागरैः ॥ ५ ॥

अर्थ–केवल पित्तपापडाही पित्तज्वरको नष्ट करताहै, यदि इसमें चन्दन और नेत्रवाला और सोंठ गेर पीयाजावे तो क्या बात है ? ॥५॥

अथ कफज्वरस्य चिकित्सामाह

पटोलत्रिफलातिक्ताशठीवासामृताभवः ।
क्वाथो मधुयुतः पीतो हन्यात्कफकृतं ज्वरम् ॥ ६ ॥

अर्थ–पटोलपत्र त्रिफला (हैड़ बहेडा आँवला) कुटकी कचूर वासेके पत्ते गिलोय इन औषधियोंका काढ़ा सहत मिलाकर पियाजावे तो तत्का-लही कफज्वर नष्ट होवे ॥ ६ ॥

अन्यच्च

निम्बविश्वामृतादारुशठीभूनिम्बपौष्करम् ।
पिप्पली बृहती चैषां क्वाथो हन्ति कफज्वरम् ॥ ७ ॥

अर्थ–नींबकीछाल, सोंठ, गिलोय, कचूर, देवदारु, चिरायता, पोह-करमूल, पीपली, कटेली इनका काढा कफज्वरमें दियाजावे तो कफज्वर शीघ्र नष्ट करे ॥ ७ ॥

अथ वातपित्तज्वरचिकित्सामाह

पर्पटाब्जामृताविश्वाकिरातैः साधितं जलम् ।
पंचभद्रमिदं ज्ञेयं वातपित्तज्वरापहम् ॥ ८ ॥

अर्थ- पित्तपापडा, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, चिरायता इन औषधियोंका काढा वातपित्तज्वरको शीघ्र नष्ट कर देता है ॥ ८ ॥

अथ वातकफज्वरचिकित्सामाह

आरग्वधकणामूलमुस्तातिक्ताभयाकृतः ।
क्वाथः शमयति क्षिप्रं ज्वरं वातकफोद्भवम् ॥ ९ ॥

अर्थ--अमलतासका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी, हैड़, इन औषधियोंका काढा शीघ्रही वातकफज्वरको नष्ट कर देता है ॥ ९ ॥

अथ पित्तकफज्वरस्य चिकित्सामाह

पटोलं चन्दनं मूर्वातिक्तापाठामृतागणः ।
पित्तश्लेष्मारुचिच्छर्दिज्वरकंडूविषापहः ॥ १० ॥

अर्थ- पटोलपत्र, चन्दन, मूर्वा, कुटकी, पाठा, गिलोय, इन औषधियोंका काढ़ा पित्त, कफ, अरुचि, कय, ज्वर, खुजली और विषको नष्ट करता है ॥ १० ॥

अथ सन्निपातज्वरस्य चिकित्सामाह

किरातकुटकीमुस्ताधान्येंद्रयवनागरैः ।
दशमूलमहादारुगजापिप्पलिकायुतैः ।
कृतः कषायः पार्श्वार्तिसन्निपातज्वरं जयेत् ॥ ११ ॥

अर्थ- चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, धनिया, इन्द्रयव, सोंठ और दशमूल मिलाकरके इन औषधियोंका काढा सन्निपातज्वरको नष्ट करता है ॥ ११ ॥

अथ शीतज्वरस्य चिकित्सामाह

क्षुद्राधान्यकशुंठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्मकैः ।
रक्तचंदनभूनिम्बपटोलवृषपौष्करैः ॥ १२ ॥
कटुकेंद्रयवारिष्टभार्ङ्गीपर्पटकैः समैः ।
काथं प्रातर्निषेवेत सर्वशीतज्वरच्छिदम् ॥ १३ ॥

अर्थ- कटेली, धनिया, सोंठ, गिलोय' नागरमोथा, पद्माख, लालचंदन चिरायता, पटोलपत्र; वांसा, पोहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजौ, निम्बकी छाल, भारंगी, पित्तपापडा, इन औषधियोंको बराबर लेकर इनका काढा प्रात-काल पीयाहुआ शीतोत्पन्न सब बुखारको नष्ट करता है ॥ १२ ॥ १३॥

अथ विषमज्वरचिकित्सामाह

मुस्ताक्षुद्रामृताशुंठीधात्रीकाथः समाक्षिकः ।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तो विषमज्वरनाशनः ॥ १४ ॥

अर्थ- नागरमोथा, कटेली, गिलोय, सोंठ, आंवले, इन औषधियोंका काढ़ा सहत और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वरको दूर करता है ॥ १४ ॥

अथैकाहिकज्वरचिकित्सामाह

पटोलत्रिफलानिंबद्राक्षाशम्याकविश्वकैः ।
काथः सितामधुयुतो जयेदेकाहिकं ज्वरम् ॥ १५ ॥

अर्थ--पटोलपत्र, त्रिफला (हैड़, बहेड़ा, आंवला,) निम्बकी छाल मुनक्का, अमलतासका गूदा, सोंठ, इन, औषधियोंका काढा मिश्री और शहत मिलाकर पीनेसे रोज आनेवाला ज्वर नष्ट होता है ॥ १५ ॥

अथ तृतीयकज्वरचिकित्सामाह

गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चंदनोशीरनागरैः ।
कृतं क्वाथं पिबेत्क्षौद्रसितायुक्तं ज्वरातुरः ।
त्र्याहिकज्वरनाशाय तृष्णादाहनिवारणः ॥ १६ ॥

अर्थ--गिलोय, धनियां, नागरमोथा, लालचन्दन, खस, सोंठ, इन औषधियोंका काढा तीसरे रोजके आनेवाले ज्वरको नष्ट करता है और तृषा, दाहको दूर करता है ॥ १६ ॥

अथ चातुर्थिकज्वरचिकित्सामाह

देवदारुशिवावासासालिपर्णीमहौषधैः ।
धात्रीयुतं श्रृतं शीतं दद्यान्मधुसितायुतम् ।
चातुर्थिकज्वरे श्वासे कासे मंदानले तथा ॥ १७ ॥

अर्थ--देवदारु, हैड़ः वासा, सालपर्णी, सोंठ, आंवला, इन औषधियोंका काढा मिश्री और सहत मिलाकर पीनेसे चौथे दिनके आनेवाले ज्वरको नष्ट करता है ॥ १७ ॥

अथानुभूतकषायः

क्षुद्रामृताभ्यां सहनागरेण सपौष्करं चैव
किराततिक्तम् । पिबेत्कषायं त्विह यश्च तिक्तं
ज्वरं निहन्त्यष्टविधं समग्रम् ॥ १८ ॥

अर्थ--कटेली, गिलोय, सौठ, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी, इन औषधियोंका काढा आठ प्रकारके ज्वरोंको दूर करता है ॥ १८ ॥

अन्यच्च

गुडूचीनिम्बधान्याकं पद्मकं रक्तचंदनैः ।
क्वाथःसर्वःज्वरान्हन्ति गुडूच्यादिस्तु दीपन- ॥ १९ ॥

अर्थ--गिलोय, निम्बकी छाल, धनिया, पद्माख, लाल चंदन, इन औषधियोंका काढा सब प्रकारके ज्वरोंको दूर करता है, यह दीपनभी है ॥ १९ ॥

इति ज्वरकषायसंग्रहः समाप्तः ।

अथ ज्वरस्योपर्यनुभूतरसाः

विषस्यैकं तथा भागो मरिचं पिप्पली कणा ।
गन्धकस्य तथा भागो भागःस्याट्टङ्कणस्य च ॥ २० ॥
सर्वत्र समभागः स्याद्धिंगुलन्तु द्विभागकम् ।
चूर्णयेत् खल्वमध्ये तु मुद्गमानां गुटीं चरेत् ।
मृत्युरूपं ज्वरं हन्ति मृत्युञ्जयरसः स्मृतः ॥ २१ ॥

अर्थ--मीठा तेलिया शोधाहुआ एकभाग कालीमिरचः कणा और पीपल, शोधाहुआ गंधक, शोधाहुआ सुहागा ये सब बराबर लेना, शोधाहुआ सिंगरफ दो भाग लेना, इन सबको कपडछान बिजोरे नींबूके रस में मूँगके बराबर गोली बनाकर देनेसे सब प्रकारके ज्वरोंको यह मृत्युंजयरस दूर करता है ॥ २० ॥ २१ ॥

हिंगुलश्च विषं व्योषं टङ्कणं नागराभये ।
जमालकसमायुक्तःसर्वज्वरविनाशनः ॥ २२ ॥

अर्थ--शोधाहुआ सिंगरफ, शोधाहुआ मीठा तेलिया सुहागा, सोंठ हैडका, वक्कल, शोधाहुआ जमालगोटा इन औषधियोंको समान भाग लेना और जमालगोटा सब औषधिके बराबर लेना यह ज्वरमुरारी सब ज्वरोंको नष्ट करता है ॥ २२ ॥

अन्यच्च

सूतं गन्धं विषं तुल्यं धूर्तबीजं त्रिभिः समम् ।
चतुर्णां द्विगुणं व्योषचूर्णं गुञ्जाद्वयं हितम् ॥ २३ ॥
जम्बीरस्य च मज्जाभिरार्द्रकस्य रसैर्युतम् ।
महाज्वरांकुशो नाम ज्वराष्टकनिषूदनः ॥ २४ ॥

अर्थ-शोधाहुआ पारा, शोधा गंधक, शोधा मीठा तेलिया यह तीनों बराबर लेना और धतूरेके बीज तीनोंके बराबर लेना और सोंठ मिरच पीपल यह तीनों चीज दोभाग लेना इन औषधियोंको कपड़छानकर जंबीरीनीबूकी मज्जा अर्थात् उसमें जो सफेद दानेसे होतेहैं वह डालने और अदरकके रसमें गोली बांधना यह महाज्वरांकुश रस सब ज्वरोंको नष्ट करताहै ॥ २३ ॥ २४ ॥

अन्यच्च

रसो हिंगुलगन्धौ च जैमालं सम्मितं त्रिभिः ।
दन्तीक्वाथेन संमर्द्य रसो ज्वरहरः परः ॥ २५ ॥

अर्थ- शोधाहुआ पारा, शोधा सिंगरफ, शोधा गंधक, शोधा. जमालगोटा इनको बराबर लेना और जमालगोटेको स बके बराबर लेना, जमालगोटेकी जड़के काढेमें सबको खरल कर गोली मूंगबराबर बनाना यह रस सब ज्वरोंको नष्ट करताहै ॥ २५ ॥

अथ सन्निपातज्वररसाः

पारदं गन्धकं टंकं सोषणं गजपिप्पली ।
व्योषश्च धत्तूरजलैः पिष्टं गुञ्जाद्वयं हितम् ॥ २६ ॥

अर्थ--शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध सुहागा, समुद्रझाग और सोंठ मिरच पीपल इन औषधियोंको समान भाग लेकर धतूरेके रसमें सरल कर दो रत्ती देनेसे सन्निपात ज्वरको नष्ट करताहै ॥ २६ ॥

अन्यच्च

शुद्धं सूतं विषं गंधं मरिचं टंकणं कणाम् ।
मर्द्दयेद्धूर्त्तजजल दिनमेकं तु शोषयेत् ।
पंचवक्त्ररसो नाम संनिपातज्वरापह ॥ २७ ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध मीठा तेलिया, शुद्ध गंधक, काली मिरच, सुहागा, पीपल इन औषधियोंको धतूरेके रसमें खरल कर एकदिन सुखाये फिर गोली बाँधलेवे यह पंचवक्त्ररस सन्निपातको दूर करताहै ॥ २७ ॥

अथ जीर्णविषमज्वररसाः

रसस्य द्विगुणं गन्धं गन्धतुल्यश्च टङ्कणम् ।
रसतुल्यं विषं योज्यं मरिचं पञ्चधाविषात् ॥ २८ ॥

अर्थ- शुद्ध पारेसे दोभाग शुद्ध गंधक लेना और गंधकके समान सुहागा लेना और पारेके बराबर मीठा तेलिया लेना और मीठे तेलियेसे काली मिरच पाँच भाग लेना इनको कपडछान कर उड़दके बराबर गोली अजीर्ण और पुराने ज्वरमें देनेसे यह रस दूर करताहै ॥ २८ ॥

अन्यच्च

रसगंधौ समौ शुद्धौ विषं ग्राह्यञ्च तत्समम् ।
जैपालं तत्समं ग्राह्यं मरिचञ्च चतुर्गुणम् ॥ २९ ॥

अर्थ- शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक यह बराबर लेना और इन दोनोंके बराबर शुद्ध मीठातेलिया लेना और काली मिरच विषसे चार भाग लेना इनको कपडछान कर अजीर्णज्वर और विषमज्वरमें देनेसे यह नष्ट करताहै मात्रा दो गुंजाकी देना ॥ २९ ॥

इति ज्वरस्योपरि रससंग्रहः समाप्तः

अथ ज्वरस्योपर्यनुभूतचूर्णगुटिकाः

आमलं चित्रकः पथ्या पिप्पली सैन्धवं तथा।
चूर्णितोयं गणो ज्ञेयः सर्वज्वरविनाशनः ॥ ३० ॥

अर्थ- आंवले, चीतेकी छाल, हैड, पीपल और सेंधानमक, इन औषधियोंको कपडछान कर चूर्ण करलेवे यह चूर्ण सब प्रकारके ज्वरोंको दूर करताहै और दस्तावर है, दीपन और पाचनभी है सब औषधि समानभाग डालना ॥ ३० ॥

अन्यच्च

मधुना पिप्पलीचूर्णं लिहेत्कासज्वरापहम् ।
हिक्काश्वासहरं कंठ्यं प्लीहघ्नं बालकोचितम् ॥ ३१ ॥

अर्थ- एकमासे पीपलके चूर्णको सहत मिलाकर चाटे तो खांसी ज्वर हिचकी साँसको दूर करताहै, और तिल्लीको नष्ट करताहै कंठको और बालकोंको हितकारी है ॥ ३१ ॥

विडंगं नागरं कृष्णा पथ्यामलविभीतकौ ।
वचा गुडूची भल्लातः विषं चैवात्र योजयेत् ॥ ३२ ॥
एतानि समभागानि गोमूत्रेण प्रपेषयेत् ।
वटी संजीवनी नाम्नी संजीवयति मानवम् ॥ ३३ ॥

अर्थ-- वायविडंग, सोंठ, पीपल, हैड, आँवला बहेडा, वच, गिलोय और शुद्ध भिलावे और मीठातेलिया इन औषधियोंको कपड़छान कर गोमूत्रमें खरल कर एक रत्तीके बराबर गोली बांधना यह संजीवनी गोली अदरकके रसमें पीनेसे सन्निपातादि रोगोंको नष्ट करतीहै ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

अथ ज्वरस्योपर्यनुभूततैलम्

मूर्वा लाक्षा हरिद्रे द्वे मंजिष्ठा सेंद्रवारुणी ।
बृहती सैन्धवं कुष्ठं रास्ना मांसी शतावरी ॥ ३४ ॥
आरनालाढ़केनैव तैलप्रस्थे विपाचयेत् ।
तैलमंगारकं नाम सर्वज्वरविमोक्षणम् ॥ ३५ ॥

अर्थ- मूर्वा और लाख, हलदी, दारुहलदी मंजीठ, इन्द्रायणकी जड़, कटेली, सेंधानमक, कूठ, रास्ना, जटामांसी, शतावरी, इन ओषधियोंका कल्क

एक सेर तिलके तैलमें पकावे, दहीका तोड चार सेर डाले जब तैल शेष रहे तब उतारलेवे यह अङ्गारक तैल सब ज्वरोंको दूर करताहै ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

अन्यच्च

लाक्षाहरिद्रामंजिष्ठाकल्कैस्तैलं विपाचयेत् ।
षड्गुणेनारनालेन दाहशीतज्वरापहम् ॥ ३६ ॥

अर्थ--लाख, हलदी और मँजीठ इन तीनों औषधियोंके कल्कको तिलके तैलमें पकावे और तैलसे छःगुणा कांजी डाले जब तैल शेष रहे तब उतारलेवे यह तैल सबप्रकारके दाह, शीतज्वरको शान्त करताहै ॥ ३६ ॥

इति ज्वरसंग्रहचिकित्सा समाप्ता

अथ ज्वरातिसारस्यानुभूतचिकित्सामाह

अथ ज्वरातिसारे अनुभूतकषायः

पाठेन्द्रयवभूनिम्बमुस्तपर्पटकामृताः ।
जयन्त्यामातिसारं हि सज्वरं समहौषधाः ॥ ३७ ॥

अर्थ–पाठा, इन्द्रजौ, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, और गिलोय; इन औषधियोंका सोंठसहित काढा ज्वरसहित आमातिसारको नाश करताहै ॥ ३७ ॥

अन्यच्च

नागरातिविषामुस्तभूनिम्बामृतवत्सकैः ।
सर्वज्वरहरः क्वाथः सर्वातीसारनाशनः ॥ ३८ ॥

अर्थ- सोंठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, इन्द्रयव, इनका काथ ज्वर और अतिसारको नष्ट करताहै ॥ ३८ ॥

अन्यच्च

गुडूचीधान्यकोशीरशुंठीवालकपर्पटैः ।
बिल्वप्रतिविषापाठारक्तचंदनवत्सकैः ॥ ३९ ॥
किरातमुस्तेंद्रयवैः कथितं शिशिरं पिबेत् ।
सक्षौद्रं रक्तपित्तघ्नं ज्वरातीसारनाशनम् ॥ ४० ॥

अर्थ- गिलोय, धनियां, खस, सोंठ, नेत्रवाला, पित्तपापडा, बेल, अतीस, पाठी, लाल चंदन, कुडेकी छाल, चिरायता, नागरमोथा, इन्द्रजौ इन औषधियोंका काढा ठंढा कर शहत मिलाकर पीनेसे ज्वरातीसार और रक्तपित्तको नाश करताहै ॥ ३९ ॥ ४० ॥

अथ ज्वरातीसारस्योपर्यनुभूतरसाः

हिङ्गुलश्च विषं व्योषं टङ्कणं गंधकं समम् ।
जम्बीररसयुक्तं मर्दयेद्यामकद्वयम् ॥ ४१ ॥
गुञ्जामात्रं प्रदातव्यो रस आनन्दभैरवः ।
कासश्वासातिसारेषु ग्रहण्यां सान्निपातिके ॥ ४२ ॥

अर्थ--शोधाहुआ सिंगरफ, और शोधा मीठा तेलिया सुहागा, ये शोधाहुआ गंधक समानभाग लेना और जंबीरी निंबूके रसमें खरल करना यह आनंदभैरव रस ज्वरातीसार खांसी श्वासादि रोगोंको नाश करताहै ॥ ४१ ॥ ४२.॥

अन्यच्च

हिंगुलं मरिचं गन्धं टङ्कणं पिप्पली विषम् ।
कनकस्य च बीजनि समांशं विजयाद्रवैः ॥ ४३ ॥
मर्दयेद्याममात्रन्तु चणमात्रा गुटी कृता ।
अग्निमान्द्यं ज्वरं तीव्रमतीसारं च नाशयेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ--शोधाहुआ सिंगरफ, काली मिरच, शोधा गन्धक; सुहागा, पीपल छोटी, शोधा मीठा तेलिया और धतूरके बीज इन औषधियोंको कपड़छान कर भांगके रसमें खरल कर चणोंके बराबर गोली बनाना। यह कनकसुन्दर रस अग्निकी मन्दता और ज्वरातीसारका नाश करताहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

इति ज्वरातीसारसंग्रहचिकित्सा

अथातीसारचिकित्सानुभूतकषायः

नागरातिविषामुस्तैरथवा धान्यनागरैः ।
तृष्णातिसारशूलघ्नं पाचनं दीपनं लघु ॥ ४५ ॥

अर्थ--सोंठ, अतीस, नागरमोथा इन तीन औषधियोंका काढा अथवा धनियाँ और सोंठ इन दोनोंकाही काढा प्यास दस्त और दर्दको दूर करताहै तथा पाचन दीपन और हलका है ॥ ४५ ॥

अन्यच्च

कुटजं दाडिमं मुस्तं धातकी बिल्वबालकम् ।
लोध्रचन्दनपाठाश्च कषायं मधुना पिबेत् ॥
कुटजादिरिति ख्यातः सर्वातीसारनाशनः ॥ ४६ ॥

अर्थ-कुड़ेकी छाल, अनारका बक्कल, नागरमोथा, धायके फूल, बेल, नेत्रवाला, पठानी लोध, लालचंदन, पाठा इन औषधियोंका काढा सहत मिलाकर पीनेसे सब प्रकारके दस्तोंको दूर करताहै ॥ ४६ ॥

अन्यच्च

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्य-
मुस्तेन कृतः कषायः ॥ सामे सशूले सह-
शोणिते च चिरप्रवृत्ते विहितोऽतिसारे ॥ ४७ ॥

अर्थ-इन्द्रजौ, अतीस, बेल, नेत्रवाला, नागरमोथा, न औषधियोंका काढा सहित आँवके तथा शूलके वा खूनके सहित जो दस्त हों उनको दूर करताहै ॥ ४७ ॥

अन्यच्च

गुडेन खादयेद्बिल्वं रक्तातीसारनाशनम् ।
आमशूलविबंधघ्नं कुक्षिरोगविनाशनम् ॥ ४८ ॥

अर्थ- गुडके साथ खाया हुआ बेलका फल रक्तातीसारको जीतताहै और आंव शूल विबन्धता कोखमें होनेवाले दर्द आदिको नाश करताहै ॥ ४८ ॥

अन्यच्च

ह्रीबेरधातकीलोध्रपाठालज्जालुवत्सकैः ।
धान्यकातिविषामुस्तगुडूचीबिल्वनागरैः ॥
कृतः कषायः शमयेदतिसारं चिरोत्थितम् ॥ ४९ ॥

अर्थ- ह्रीवेर, धायके फूल, पठानीलोध, पाढ़ल, लज्जालू, कुडेकी छाल, धनिया, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, बेलगिरी सोंठ इन औषधियोंका काढा पीनेसे बहुत दिनोंसे लगे हुये दस्त दूर होते हैं ॥ ४९ ॥

अन्यच्च

धातकीबिल्वलोध्राणि बालकं गजपिप्पली ।
एभिः कृतं शृतं शीतं शिशुभ्यः क्षौद्रसंयुतम् ।
प्रदद्यादवलेहं वा सर्वातीसारिणां हितम् ॥ ५० ॥

अर्थ–धायकेफूल, बेलगिरी, पठानीलोध, नेत्रवाला, गजपीपल इन औषधियोंके काढेको शीतल कर शहत मिलाकर बालकको चटावे तो बालकके दस्त दूर होवें ॥ ५० ॥

इत्यतिसारकषायः

अथातीसारस्योपर्यनुभूतरसौ

हिंगुलं शुद्धकर्पूरं मुस्तेन्द्रयवसंयुतम् ।
सर्वातीसारशमनं खाखसीक्षीरभावितम् ॥ ५१ ॥

अर्थ–शोधा हुआ सिंगरफ, शुद्ध कपूर, नागरमोथा, इन्द्रजौ इनको एकजगह समानभाग लेकर मिलाना फिर अफीमके पानीमें खरल करना यह रस सब प्रकारके दस्तोंको दूर करताहै ॥ ५१ ॥

अन्यच्च

हिंगुलं मरिचं गन्धं टङ्कनं पिप्पली विषम् ।
कनकस्य च बीजानि समांशं विजयाद्रवैः ॥ ५२ ॥

मर्दयेद्याममात्रन्तु चणमात्रा गुटी कृता ।
अग्निमान्द्यं ज्वरं तीव्रमतीसारञ्च नाशयेत् ॥ ५३ ॥

अर्थ–शुद्धसिंगरफ, कालीमिरच, शुद्धगन्धक, सुहागा, पीपल, शुद्ध मीठातेलिया इन औषधियोंको समानभाग लेना धतूरेके बीज सबके बराबर लेना भांगके रसमें खरल करना चनेके बराबर गोली बनाना यह रस सब प्रकारके दस्तोंको दूर करता है ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

इत्यतीसारसंग्रहरसाः

अथातीसारस्योपरि–चूर्णगुटिकाः

अजमोदामोचरसं सश्रृङ्गवेरं सधातकीकुसुमम् ।
मथितेन युतं पीतं गंगामपिवाहिनीं रुंध्यात् ॥ ५४ ॥

अर्थ–अजमोद; मोचरस, अदरक, धायके फूल इन औषधियोंको कपड़छान कर गौके मट्ठेके संग पीनेसे सब प्रकारके दस्त दूर होते हैं॥५४॥

अन्यच्च

मुस्तमिंद्रयवं बिल्वं लोध्रं मोचरसं तथा ।
धातकीं चूर्णयेत्तक्रगुडाभ्यां पाययेत्सुधीः ।
सर्वातीसारशमनं चूर्णं संग्रहणं परम् ॥ ५५ ॥

अर्थ–नागरमोथा, इन्द्रजौ, वेलगिरी, पठानीलोध, मोचरस धायके फूल इन औषधियोंका चूर्ण गुड और गौके मट्ठेके साथ पीनेसे सब प्रकारके दस्त बंद होते हैं ॥ ५५ ॥

अन्यच्च

दाडिमस्य पलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकम् ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलं यवानी मरिचं तथा ॥ ५६ ॥
धान्यकं जीरकं शुंठी प्रत्येकं पलसंमितम् ।
कर्षमात्रातुगाक्षीरी त्वक्पत्रैलाश्च केशरम् ।
प्रत्येकं कोलमात्रास्स्युस्तच्चूर्णं दाडिमाष्टकम् ॥ ५७ ॥

अर्थ-अनारदाना, और मिश्री, बत्तीस तोला लेना और पीपलपीपलामूल, अजवायन, कालीमिरच, धनिया, जीरा सफेद; सोंठ इनको चार २ तोला लेना. वंशलोचन, दालचीनी, इलायची, नागकेशर इनको आठ २ मासे लेना, इनको कपड़छान कर इस चूर्णको खानेसे सब प्रकारके दस्त दूर होते हैं ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

इत्यतीसारसंग्रहचिकित्सा समाप्ता

अथ ग्रहणीरोगचिकित्सा

अनुभूतकषायः

गुडूच्यतिविषाशुंठीमुस्तैः क्वाथः कृतो जयेत् ।
आमानुषक्तां ग्रहणीं ग्राही पाचनदीपनः ॥ ५८ ॥

अर्थ-गिलोय, अतीस, सोंठ, नागरमोथा इन औषधियोंका काढा आमयुक्त ग्रहणीको दूर करता है और मलको गाढ़ा करता है, दीपन और पाचन है ॥ ५८ ॥

अन्यच्च

धान्याकातिविषोदीच्ययवानीमुस्तनागरम् ।
ग्रहणीरोगनाशाय दद्याद्दीपनपाचनम् ॥ ५९ ॥

अर्थ–धनिया, अतीस, नेत्रवाला, अजवायन, नागरमोथा, सोंठ इन औषधियोंका काढा ग्रहणीरोगको दूर करताहै और दीपन, पाचन है ॥ ५९ ॥

अथ ग्रहणीरोगस्योप–
यंनुभूतरसः

दग्धान् कपर्दकान् पिष्ट्वा त्र्यूषणं टङ्कनं विषम् ।
गन्धकं शुद्धसूतञ्च तुल्यं जम्बीरजैर्द्रवैः ॥ ६० ॥
मर्दयेद्भक्षयेन्माषं मरिचार्द्रं लिहेदनु ।
निहन्ति ग्रहणीरोगं पथ्यं तक्रौदनं हितम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–कौडियोंका भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, मीठातेलिया, शुद्धगंधक, शुद्धपारा इनको समान भाग लेना; पारे और गन्धककी पहिले कजली कर फिर यह औषधि डालना एकमासे कालीमिरच और अदरकके साथ खानेसे यह रस ग्रहणीरोगको दूर करता है ॥ ६० ॥ ६१ ॥

अन्यच्च

रसगंधकयोश्चापि जातीफललवङ्गयोः ।
प्रत्येकं शाणमानञ्च श्लक्ष्णचूर्णीकृतं शुभम् ॥ ६२ ॥
सूर्य्यावर्त्तरसेनैव बिल्वपत्ररसेन च ।
शृंगाटकसमुद्भूतस्वरसेन चमर्दयेत् ॥ ६३ ॥
चण्डातपेन संशोष्य वटिकां कारयेद्भिषक् ।
बिल्वपत्ररसेनैव दापयेद्रक्तिकाद्वयम् ॥
दध्ना च भोजनीयश्च ग्रहणीरोगनाशनम् ॥ ६४ ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक. जायफल, लौंग यह सब चार चार माशे लेना; पारे और गन्धककी कजली कर फिर सबको एक जगह मिला सूरजमुखी और बेलपत्र और सिंघाडेके स्वरसमें खरल करना जब खूब घुटजाय तब धूपमें सुखा लेना दो रत्ती बेलपत्रके रसके साथ खानेसे यह रस असाध्यग्रहणी संग्रहणीको दूर करता है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥६४॥

इति ग्रहणीरोगस्योपर्यनुभूतरस:

अथ ग्रहणीरोगस्योपर्यनुभूतचूर्णानि

तक्रेण यःपिबेन्नित्यं चूर्णं मरिचसंभवम् ।
चित्रसौवर्चलोपेतं ग्रहणी तस्यनश्यति ॥ ६५ ॥

अर्थ—छाछके साथ कालीमिरच, चीतेकी छाल, संचरनमक इनका चूर्ण रोज प्रातःकाल पीनेसे ग्रहणीरोगको दूर करताहै ॥ ६५ ॥

अन्यच्च

जातीफलं लवंगैलापत्रत्वङ्नाकेशरम् ।
कर्पूरचंदनतिलत्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥ ६६ ॥
तालीसपिप्पलीपथ्यास्थूलजीरकचित्रकैः ।
शुंठीविडंगमरिचान्समभागान्विचूर्णयेत् ॥ ६७ ॥
यावंत्येतानि सर्वाणि कुर्य्याद्भंगां च तावतीम् ।
सर्वचूर्णसमा देया शर्कराचभिषग्वरैः ॥ ६८ ॥

कर्षमात्रं ततः खादेन्मधुना प्लावितं सुधीः ।
अस्य प्रभावाद्‌ग्रहणीकासश्वासारुचिक्षयाः ।
वातश्लेष्मप्रतिश्यायाःप्रशमं यांति वेगतः ॥ ६९ ॥

अर्थ–जायफल, लौंग, इलायची, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, कपूर, सफेद चंदन, कालेतिल, वंशलोचन तगर, आंवले, तालीसपत्र, पीपल, हैड़, काला जीरा, चीतेकी छाल, सोंठ. वायविडंग, कालीमिरच ये औषधि समानभाग लेवे और इन सब औषधियोंके समानभाग भांग मिलाना; सब चूर्णके बराबर मिश्री मिलाना; सबको एकत्र कर एक-तोला नित्य सहतके संग खानेसे संग्रहणी, खांसी, श्वास, अरुचि. राजयक्ष्मा, वात कफके विकार और जुकाम आदि रोग शीघ्रही नष्ट होजाते हैं ॥ ६६–६९ ॥

अन्यच्च

पुस्तकातिविषाबिल्वकौटजं सूक्ष्मचूर्णितम् ।
मधुना च समालीढं ग्रहणीं सर्वजां जयेत् ॥ ७० ॥

अर्थ–नागरमोथा, अतीस, बेलखिरी, इन्द्रयव इन औषधियोंको कपडछान कर सहतके साथ खानेसे ग्रहणीरोग दूर होता है ॥७०॥

इति ग्रहणीसंग्रहचिकित्सा ॥

अथार्शश्चिकित्सायामनुभूतलेपाः

स्नुक्क्षीरं रजनीयुक्तं लेपाद्दुर्नामनाशनम् ॥ ७१ ॥

अर्थ-आकका दूध और हलदीका चूर्ण मिलाकर लगानेसे बवासीर के मस्से तत्काल दूर होते हैं ॥ ७१ ॥

अन्यच्च

कोषातकीरजोघर्षान्निपतन्ति गुदोद्भवाः ॥ ७२ ॥

अर्थ कडुवी तोरईके बीजका चूर्ण बवासीरके मस्सेपर मलनेसे मस्से शीघ्र नष्ट होजाते हैं ॥ ७२ ॥

अन्यच्च

ज्योत्स्निकामूलकल्केन लेपो रक्तार्शसां हितः ॥ ७३ ॥

अर्थ—मालकाङ्गनीकी जडको पानीमें पीस मस्सोंके लेप करनेसे खूनी बवासीर शांत होती है ॥ ७३ ॥

इत्यर्शोलेपः

अथार्शोपयनुभूतगुटिकाः

लवणोत्तमवह्निकलिङ्ग यवांश्चिरबिल्व-
महापिचुमर्दयुतान् । पिब सप्तदिनं माथिता-
लुलितान्यदि मर्दितुमिच्छसि पायुरुहान् ॥ ७४ ॥

अर्थ—सेंधानमक, चीतेकी छाल, इन्द्रयव, करंज, बकायनके फल इनको समानभाग लेकर चूर्ण कर धायके साथ पीनेसे शीघ्रही बवासीर नष्ट होजाती है ॥ ७४ ॥

अन्यच्च

चिरबिल्वाग्निसिन्धूत्थनागरेन्द्रयवारलु ।
तक्रेण पिबतोऽर्शांसि निपतन्त्यसृजा सह ॥ ७५ ॥

अर्थ—करंजवा, चीतेकी छाल, सेंधानमक, इन्द्रयव, अरलूकी छाल

इन सबको समान भाग लेकर चूर्णकर छाछके साथ फंकी लेनेसे बादी खूनी सहज बवासीर दूर होतीहै ॥ ७५ ॥

अन्यच्च

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् ।
दधिसरमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यन्ति रक्तवहाः ॥७६॥

अर्थ-मक्खन और काले तिल इन दोनोंके खानेसे खूनी बवासीर नष्ट होतीहै, वा नागकेशरको मक्खनमें मिलाकर खानेसे दूर होतीहै, केवल गौके दधीको कुछ चलाकर विना घी निकाले हुए मट्ठेको सेवन करनेसे शीघ्र खूनी बवासीर नष्ट होतीहै ॥ ७६ ॥

जातीफलं लवङ्गञ्च पिप्पली सैन्धवं तथा ।
शुंठी धत्तूरबीजञ्च दरदं टङ्कनं तथा ॥ ७७ ॥
समं सर्वं विचूर्ण्याथ जम्भाम्भसिविमर्दयेत् ।
जातीफलवटीचेयमर्शोग्निमान्द्यंनाशिनी ॥ ७८ ॥

अर्थ-जायफल, लौंग, पीपल, सेंधानमक, सोंठ, धतूरेके बीज, शुद्ध सिंगरफ, सुहागा इनको बराबर लेकर जामुनके अर्कमें घोटकर खानेसे यह जातीफल वटी सब प्रकारकी बवासीर तथा अर्शनिमित्तक अग्निकी मन्दताको दूर करतीहै ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

अन्यच्च

शूरणो वृद्धदारुश्च भागैः षोड़शभिः पृथक् ।
मुसलीचित्रकौ ज्ञेयावष्टभागमितौ पृथक् ॥ ७९ ॥

शिवाबिभीतकौ धात्रीविडंगं नागरं कणाः ।
भल्लातः पिप्पलीमूलं तालीसं च पृथक् पृथक् ॥ ८० ॥
चतुर्भागप्रमाणानि त्वगेला मरिचं तथा ।
द्विभागमात्रणि पृथक् ततस्त्वेकत्र चूर्णयेत् ॥ ८१ ॥
द्विगुणेन गुडेनाथ गुटिकाः कारयेद्बुधः ।
प्रबलाग्निकरा एते तथार्शो नाशनाः परम् ॥ ८२ ॥

अर्थ—जमीकंद १६ तोले, विधारा १६ तोले, मुसली ८ तोला, चीतेकी छाल ८ तोला, हैड़, बहेड़ा, आमला, वायविंडग, सोंठ, पीपल, भिलावाँ शुद्ध, पीपलामूल, तालीसपत्र, यह औषधि चार २ तोला लेना-दालचीनी, इलायची, लेना काली मिरच दो २ तोला इन सब औषधियोंका चूर्ण कर चूर्णमें दुगुना गुड मिलाकर गोली बनाना इन गोलियोंके सेवनकरनेसे अग्निकी मन्दता तथा सबप्रकारकी बवासीर नष्ट होतीहै ॥ ७९- ८२ ॥

इत्यर्शोरोगोपयर्नुभूतगुटिकाः

अथाग्निमान्द्याजीर्णचिकित्सा

शुद्धसूतं विषं गंधमजमोदां फलत्रयम् ।
सर्जक्षारं यवक्षारं वह्निः सैंधवजीरकौ ॥ ८३ ॥
सौवर्चलं विडंगानि सामुद्रं त्र्यूषणं समम् ।
विषमुष्टिं सर्वतुल्यां जंबीराम्लेन मर्दयेत् ।
मरिचाभां गुटीं खादेत्सर्वाजीर्णप्रशांतये ॥ ८४ ॥

अर्थ--शुद्ध पारा शुद्ध मीठा तेलिया शुद्ध गंधक अजमोद हैड बहेडा आंवला सज्जीखार जवाखार चित्रक सेंधानमक जीरा स्याह कालानमक मनयारीनमक सामुद्रिक नमक सोंठ मिरच पीपल इन औषधियोंको समानभाग लेना और सब औषधियोंके बराबर बकायनके फलका चूर्ण लेना सबको जंभीरी नींबूके अर्कमें खरल करना और मिरचके बराबर गोली बनाना यह गोली सब प्रकारके अजीर्णको दूर करतीहैं ॥ ८३ ८४ ॥

अन्यच्च

लवङ्गशुंठीमरिचानि भृष्टसौभाग्यचूर्णानि
समानि कृत्वा। भाव्यान्यपामार्गहुताशवारा
प्रभूतमांसादिकजारणाय ॥ ८५ ॥

अर्थ- लौंग सोंठ मिरच भुना हुआ सुहागा इन सब औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण कर चिरचटा व चीतेकी छालमें घोटकर गोली बनाना यह गोली सब प्रकारके अजीर्ण तथा अग्निमन्दताको दूर करतीहैं ॥ ८५ ॥

शुद्धसूतं विषं गन्धं समं सर्वं विचूर्णयेत् ।
मरिचं सर्वतुल्यश्च कंटकार्य्याः फलद्रवैः ॥ ८६ ॥
मर्दयेद्भावयेत्सर्वमेकविंशतिवारकम् ।
त्रिगुंजां गुटिकां खादेत्सर्वाजीर्णप्रशान्तये ॥ ८७ ॥

अर्थ--शुद्धपारा शुद्धमीठातेलिया शुद्धगंधक इनको समान भाग लेकर पहिले पारे और गंधककी कजली करे फिर सब चूर्णके बराबर काली-

मिरचका चूर्ण डाले सबको खरलमें डाल कटेलीके फलके रसमें इक्कीस बार भावना देवे तीनरत्तीके प्रमाणकी गोली बनाना यह गोली सब प्रकारके अजीर्णको दूर करतीहै ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

अन्यच्च

त्रिकटुकमजमोदासैन्धवे जीरके द्वे
समधरणधृतानामष्टमो हिङ्गुभागः ।
प्रथमकवलभुक्तं सर्पिषा चूर्णमेत-
ज्ज्वलयति जठराग्निं वातरोगांश्च हन्यात् ॥ ८८ ॥

अर्थ--सोंठ मिरच पीपल अजमोद सेंधानमक जीरा स्याह जीरा सफेद इन औषधियोंको समानभाग लेना और हींग आठवां भाग लेना सबको चूर्ण कर भोजनके पहिले घीके साथ ग्रास खानेसे या भोजनके बाद वैसेही खानेसे यह चूर्ण सब प्रकारके अजीर्णको दूर करताहै और अग्निको बढाताहै वातरोगका नाश करता है ॥ ८८ ॥

अन्यच्च

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ।
अग्निसन्दीपनं हृद्यं जिह्वाकंठविशोधनम् ॥ ८९ ॥

अर्थ--भोजनके पहिले सेंधानमक और अदरकके खानेसे अग्निकी मन्दता दूर होतीहै जीभ और कंठ शुद्ध होताहै ॥ ८९ ॥

इत्यग्निमान्द्याजीर्णसंग्रहचिकित्सा ।

अथ क्रिमिरोगस्यानुभूतचिकित्सा

शुद्धसूतं समं गन्धमभ्रं लौहं मनःशिला ।
धातकी त्रिफला लोध्रं विडंगं रजनीद्वयम् ॥ ९० ॥
भावयेत्सप्तधा सर्वं शृङ्गवेरभवै रसैः ।
चणमात्रां गुटीं कृत्वा त्रिफलारससंयुताम् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय क्रिमिरोगोपशान्तये ॥ ९१ ॥

अर्थ–शुद्धपारा शुद्धगंधक, शुद्धअभ्रक, शुद्ध लोहसार शुद्धमैनशिल इन सबको समानभाग लेना और धायके फूल, हैड, बहेडा, आंवला, पठानीलोध, वायविडंग, हलदी, दारुहलदी इनको समान लेकर सबका चूर्णकर सात वार अदरकके रसमें भावना देना, फिर त्रिफलेके रसमें चनेके प्रमाणवाली गोली बनाना, यह गोली सवेरेके वक्त खानेसे सबप्रकारके कृमिको नष्ट करती है ॥ ९०-९१ ॥

अन्यच्च

सूतं गन्धं मृतं लौहं मरिचं विषमेव च ।
धातकी त्रिफला शुंठी मुस्तकं सरसाञ्जनम् ॥ ९२ ॥
त्रिकटु मुस्तकं पाठा वालकं बिल्वमेव च ।
भावयेत्सर्वमेकत्र स्वरसैर्भृङ्गजैस्ततः ।
क्रिमिरोगविनाशाय रसोऽयं क्रिमिनाशनः ॥ ९३

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक, लौहसार, कालीमिरच, शुद्ध मीठा तेलिया, धायके फूल, हैड, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, नागरमोथा, रसोत, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, पाठा, नेत्रवाला, बेलगिरी, इनको

समानभाग लेकर भंगरेके रसमें भावना देकर गोली बनाना यह गोली सबप्रकारके कृमियोंको नष्ट करती है ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

इति कृमिरोगस्य संग्रहचिकित्सा

अथ पांडुरोगस्यानुभूतचिकित्सा

फलत्रिकामृतावासातिक्ताभूनिम्बनिम्बजः ।
क्वाथः क्षौद्रयुतो हन्यात्पांडुरोगं सकामलम् ॥ ९४ ॥

अर्थ--हैड़, बहेडा, आंवला, गिलोय, वांसा, कुटकी, चिरायता, निम्बकी छाल, इन औषधियोंको समानभाग लेकर काढा करे इस काढेको सहत मिलाकर पीनेसे पीलियारोग, कमलवाय आदि रोग शीघ्र नष्ट होते हैं ॥ ९४ ॥

अन्यच्च

पुनर्नवाभयानिम्बदार्वीतिक्तापटोलकैः ।
गुडूचीनागरयुतैः क्वाथो गोमूत्रसंयुतः ।
पांडुकासोदरश्वासशूलसर्वांगशोथहा ॥ ९५ ॥

अर्थ--(पुनर्नवा) सांठकी जड, हैड, निंबकी छाल, दारुहलदी, कुटकी, पठोलपत्र, गिलोय, सोंठ; इन औषधियोंको समान भाग लेकर काढा करे गोमूत्र मिलाकर पीनेसे पांडु रोग, खाँसी, उदररोग, श्वास, शोथआदि रोग दूर होते हैं ॥ ९५ ॥

पाण्डुरोगस्योपर्यनुभूतचूर्णगुटिका

चित्रकत्रिफलामुस्तविडंगयूषणानि च ।
समभागानि सर्वाणि नवभागहतायसः ॥ ९६ ॥

एतदेकीकृतं चूर्णं मधुसर्पिर्युतं लिहेत् ।
गोमूत्रमथवा तक्रमनुपाने प्रशस्यते ॥ ९७ ॥
पांडुरोगं जयत्युग्रं त्रिदोषं च भगंदरम् ।
शोथकुष्ठोदरार्शांसि मंदाग्निमरुचिं कृमीन् ॥ ९८ ॥

अर्थ--चीतेकी छाल, हैड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, वायविडंग, सोंठ मिरच, पीपल, इन औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण करे चूर्णके बराबर लोहभस्म मिलावे; सहत वा घी वा गोमूत्र वा छाछके साथ खावे. इस चूर्णके खानेसे असाध्य पांडुरोग, त्रिदोष, भगंदररोग, सूजन, कुष्ठ, उदररोग, बवासीर, मंदाग्नि, अरुचि, कृमिरोग आदि सब रोग नष्ट होते हैं ॥ ९६--९८ ॥

अन्यच्च

त्रिफलं त्र्यूषणं चव्यं पिप्पलीमूलचित्रकौ ।
दारुमाक्षिकधातुत्वग्दार्वीमुस्तं विडंगकम् ॥ ९९ ॥
प्रत्येकं कर्षमात्रं हि सर्वद्विगुणितं तथा ।
मंडूरं चूर्णयेत्सर्वं गोमूत्रेऽष्टगुणे क्षिपेत् ॥ १०० ॥
पक्त्वा च गुटिकाः कृत्वा दद्यात्तक्रानुपानतः ।
कामलापांडुमेहार्शःशोथकुष्ठकफामयान् ॥
ऊरुस्तंभमजीर्णं च प्लीहानं नाशयंति च ॥ १०१ ॥

अर्थ--हैड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, चव्य, पीपलामूल, चीतेकी छाल, देवदारु, सोनामक्खीका भस्म, दालचीनी, दारुहलदी, नागरमोथा, वायविडंग इन औषधियोंको समानभाग लेकर चूर्ण करे

चूर्णसे दुगुना शुद्ध मंडूर लेवे, और सबसे आठ गुणा गोमूत्र लेकर पकावे फिर खरल करे, फिर गोली बनावे यह गोली छाछके साथं खानेसे कमलवाय, (पीलिया रोग) प्रमेह, बवासीर, सूजन, कुष्ठ, कफके रोग ऊरुस्तंभ, अजीर्ण, तिल्ली आदि रोग शीघ्र नष्ट होते हैं ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥

अन्यच्च

दार्वीं सत्रिफलाव्योषविडङ्गान्ययसो रजः ।
मधुसर्पिर्युतं लिह्यात्कामलापांडुरोगवान् ॥ १०२ ॥

अर्थ--दारु हलदी, हैड बहेड़ा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, शुद्ध लोहका चूर्ण इनको समान लेकर सहत वा घीके साथ मिलाकर खानेसे कमलवाय, पीलिया आदि रोग दूरहोते हैं ॥ १०२ ॥

अन्यच्च

त्रिफलाया गुडूच्या वा दार्व्या निम्बस्य वा रसः ।
प्रातर्माक्षिकसंयुक्तः शीलितः कामलापहः ॥ १०३ ॥

अर्थ--हैड़, बहेड़ा; आंवलेका रस वा गिलोयरस वा दारु हल्दीका काढा वा निम्बकी छालका काढ़ा प्रातःकाल सहत मिलाकर पीनेसे कमलवाय, पीलियारोगको नष्ट करता है ॥ १०३ ॥

इति पांडुरोगस्य चिकित्सा

अथ रक्तपित्तस्यानुभूतचिकित्साकषायः

वासाद्राक्षाभयाक्वाथः पीतः सक्षौद्रशर्करः ।
निहन्ति रक्तपित्तार्तिश्वासकासान्सुदारुणान् ॥ १०४ ॥

अर्थ--बांसेके पत्ते, मुनक्का, हैड़, इन औषधियोंका काढ़ा सहत और मिश्री मिलाकर पीनेसे रक्तपित्तकी पीड़ा श्वास खांसी आदि कठिन रोग शान्त होतेहैं ॥ १०४ ॥

अन्यच्च

वृषपत्राणि निष्पीड्य रसं समधुशर्करम् ।
पिबेत्तेन शमं याति रक्तापित्तं सुदारुणम् ॥ १०५ ॥

अर्थ--बांसेके पत्तोंको कूटकर अर्क निकाल उसमें सहत और मिश्री मिलाकर पीनेसे असाध्यभी रक्तपित्त दूर होताहै ॥ १०५ ॥

इति कषायः

अथ रक्तपित्तस्योपर्यनुभूतगुटिका

अभया मधुसंयुक्ता पाचनी दीपनी मता ।
श्लेष्माणं रक्तपित्तञ्च हन्ति शूलातिसारनुत् ॥ १०६ ॥

अर्थ--केवल हैडकाबक्कलही चूर्ण कर सहतके साथ चाटनेसे पाचन और दीपन है । कफ रोगको नाश करताहै, रक्तपित्त शूल दस्त आदि रोग दूर होतेहैं ॥ १०६ ॥

अन्यच्च

नासाप्रवृत्तरुधिरं घृतभृष्टं श्लक्ष्णपिष्टमामलकम् ।
सेतुरिव तोयवेगं रुणद्धि मूर्ध्नि प्रलेपेन ॥ १०७ ॥

अर्थ--घीमें आँवलोंको भूनकर शिरमें लेप करनेसे नासाप्रवृत जो रुधिर है। अर्थात् नकसीर दूर होतीहै जैसे जलके वेगको पुल बांधदेताहै तैसेही यह प्रयोग है ॥ १०७ ॥

अन्यच्च

एलापत्रत्वचोऽर्द्धाक्षाः पिप्पल्यर्द्धपलं तथा ।
सितामधुकखर्जूरमृद्वीकाश्च पलोन्मिताः ॥ १०८ ॥
संचूर्ण्य मधुना युक्ता गुटिकाः कारयेद्भिषक् ।
गुटिका तर्पणी वृष्या रक्तपित्तं च नाशयेत् ॥ १०९ ॥

अर्थ--इलायचीके बीज, तेजपात, दालचीनी इनको आधा आधा तोला लेना और पीपल दो तोला लेना और मिश्री, मुलहटी, पिंडखजूर मुनक्का चार २ तोला लेना सबको कूटकर गोली बनाना यह गोली रुचिको पैदा करतीहैं बल, कारक हैं और रक्तपित्तको नाश करतीहैं ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

इति रक्तपित्तस्य संग्रहचिकित्सा

अथ राजयक्ष्मणोऽनुभूतचिकित्सा

सितोपला षोडश स्यादष्टौ स्याद्वंशरोचना ।
पिप्पलीस्याच्चतुष्कर्षास्यादेलाचद्विकार्षिकी ॥ ११० ॥
एककर्षस्त्वचः कार्यश्चूर्णयेत्सर्वमेकतः ।
सितोपलादिकं चूर्णं मधुसर्पिर्युतं लिहेत् ॥ १११ ॥
श्वासकासक्षयहरं हस्तपादांगदाहजित् ।
मंदाग्निं सुप्तजिह्वत्वं पार्श्वशूलमरोचकम् ।
ज्वरमूर्ध्वगतं रक्तं पित्तमाशु व्यपोहति ॥ ११२ ॥

अर्थ--मिश्री १६ तोले वंशलोचन ८ तोले पीपल ४ तोले छोटी इलायचीके बीज दो २ तोले दालचीनी १ तोला इन सब औषधियोंको कूट छान चूर्ण करे, इस चूर्णको सितोपलादि चूर्ण कहते हैं इस चूर्णको सहत और घीके साथ मिलाकर खानेसे श्वास, खांसी, राजयक्ष्मा, हाथ-पैरोंका तथा अंगका दाह, मंदाग्नि, जीभकी शून्यता, पाँशूका दर्द, अरोचक, ज्वर, शरीरके ऊपरके भागके रोग, पित्तके रोगादि सब शान्त होते हैं ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥

नेत्रलोचनचंद्रेन्दुप्रमाणं भागमाहरेत् ।
वल्लुजं फटकी भृष्टा गरलं नवसादरम् ॥ ११३ ॥
चूर्णमेषां सितायुक्तं गुंजार्धं योजयेद्भिषक् ।
क्षयकेसरिनामायं रसःपरमदारुणः ॥ ११४ ॥

अर्थ–कालीमिरच २ दोभाग भुनी फिटकडी २ दोभाग मीठा-तेलिया विष १ एक भाग नवसादर १ भाग इन औषधियोंका चूर्ण कर चूर्णके बराबर मिश्री मिलाकर यह रज आधीरत्ती खानेसे असाध्यराज-यक्ष्मा भी दूर होता है ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

पिप्पलीगुडसंसिद्धं छागक्षीरयुतं घृतम् ।
एतदग्निप्रवृद्ध्यर्थं सर्पिश्च क्षयकासिनाम् ॥ ११५ ॥

अर्थ–पीपल और गुडका कल्क कर बकरीका दूध मिलाकर घी पकावे, जब शेष घी रह जावे तब उतारलेवे, इस घीके सेवनसे राज-यक्ष्मा, खांसी आदि रोग दूर होते हैं ॥ ११५ ॥

इति राजयक्ष्मसंग्रहचिकित्सा

अथ कासरोगस्यानुभूतचिकित्सा

हिङ्गुलं मरिचं गन्धं सव्योषं टङ्कणं तथा ।
द्विगुंजामार्द्रकद्रावैः सन्निपातं सुदारुणम् ॥
कासं नानाविधं हन्ति शिरोरोगं विनाशयेत् ॥ ११६ ॥

अर्थ शुद्ध शिंगरफ, कालीमिरच, शुद्धगंधक, सोंठ, भुना हुआ सुहागा इन औषधियोंको समानभाग लेकर चूर्ण कर अदरकके अर्कमें गोली बनावे इनके खानेसे कठिन सन्निपात, खांसी, शिरके रोगादि शीघ्र नष्ट होते हैं ॥ ११६ ॥

अन्यच्च

त्रिफलाव्योषचूर्णं च समभागं प्रकल्पयेत् ।
मधुना सह पानात्तु दुष्टकासं नियच्छति ॥ ११७ ॥

अर्थ--हैड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ मिरच, पीपल इन औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण कर सहतके साथ चाटनेसे असाध्य खांसीको भी आराम होता है ॥ ११७ ॥

अन्यच्च

हरीतकीनागरमुस्तचूर्णंगुडेनतुल्यं गुटिकाविधेया ।
निवारयत्यास्यविधारितेऽयं श्वासं प्रवृद्धं प्रबलं च
कासम् ॥ ११८ ॥

अर्थ--सोंठ नागरमोथा इनका चूर्ण कर चूर्णके बराबर गुड़ मिलाकर गोली बनावे, गोलीको मुखमें रखकर उसका रस जानेसे बढी हुई श्वास, खाँसी दूर होती है ॥ ११८ ॥

अन्यच्च

हरीतकी कणा शुंठी मरिचं गुडसंयुतम् ।
कासघ्नो मोदकः प्रोक्तस्तृष्णारोचकनाशनः ॥ ११९ ॥

अर्थ--हैड़-पीपल-सोंठ-कालीमिरच इनका चूर्ण कर चूर्णके बराबर गुड़ मिलाकर गोली बनाना, इन गोलियोंके सेवन करनेसे खाँसी प्यास अरुचि आदि रोग नाश होते हैं ॥ ११९ ॥

इति कासरोगस्य संग्रहचिकित्सा

अथ हिक्काश्वासरोगस्यानुभूताचिकित्सा

रसं गन्धं विषं टङ्कंशिलोषणकटुत्रयम् ।
सर्वं संमर्द्य दातव्यो रसः श्वासकुठारकः ॥ १२० ॥

अर्थ--शुद्धपारा शुद्धगन्धक, सुहागा शुद्धमैनसिल, कालीमिरच, सोंठ, मिरच, पीपल, इन औषधियोंको समान लेकर चूर्ण कर पहिलेपारे और गंधककी कजली कर फिर इस चूर्णको मिलादेवे इसका नाम श्वासकुठार रस है यह श्वासको शीघ्र नष्ट करता है ॥ १२० ॥

अन्यच्च

पिप्पली देवदारुश्च शुंठी चूर्णं समं तथा ।
हिक्कां श्वासं सदा हन्ति पिबेदुष्णजलेन च ॥ १२१ ॥

अर्थ--पीपल, देवदारु, सोंठ, इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर इस चूर्णको गरम जलके साथ खानेसे हिचकी श्वास आदिक रोग दूर होते हैं ॥ १२१ ॥

अन्यच्च

कृष्णामलकशुंठीनां चूर्णं मधुसितायुतम् ।
मुहुर्मुहुः प्रयोक्तव्यं हिक्काश्वासनिबर्हणम् ॥ ॥ १२२ ॥

अर्थ--पीपल, आंवला, सोंठ, इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर चूर्णको सहत और मिश्री मिलाकर बार २ खानेसे शीघ्रही हिचकी और श्वास दूर होते हैं ॥ १२२ ॥

अन्यच्च

शिखिपुच्छभूतिपिप्पलीचूर्णं मधुमिश्रितं लीढम् ।
हिक्कां हरति प्रबलां प्रबलं श्वासं नाशयत्याशु ॥ १२३ ॥

अर्थ--मोरके पंखकी राखकर उसमें पीपलका चूर्ण मिलाकर सहतमें चाटनेसे बढीहुई हिचकी तथा बढा हुआ श्वास शीघ्रही नष्ट हो जाता है ॥ १२३ ॥

इति हिक्काश्वासरोगस्य संग्रह-चिकित्सा

अथ स्वरभेदस्यानुभूतचिकित्सा

रसं गन्धं विषं टङ्कं मरिचं चव्यचित्रकम् ।
आर्द्रकस्य रसेनैव संमर्द्य गुटिकां कृताम् ॥ १२४ ॥
गुंजात्रयप्रमाणेन खादेत्तोयानुपानतः ।
स्वरभेदं निहन्त्याशु श्वासं कासं सुदुस्तरम् ॥ १२५ ॥

अर्थ--शुद्धपारा, शुद्धगंधक, शुद्धमीठातेलिया, सुहागा कालीमिरच, चव्य, चीतेकी छाल इनको समान भाग लेकर पहिले गंधक और पारेकी कजली कर इन सबका चूर्ण मिलादेवे

अदरकके अर्कमें गोली बनावे तीन ३ रत्तीकी एक गोली जलके साथ खानेसे गलेका बैठना श्वास, खांसी, अतिकठिन भी शीघ्र नष्ट होती है ॥ १२४ ॥ १२५ ॥

अन्यच्च

सशर्करं शुंठीचूर्णं क्षौद्रेण सह योजितम् ॥
कोकिलस्वर एव स्याद्गुटिका भुक्तमात्रतः ॥ १२६ ॥

अर्थ–मिश्री और सोंठ इनका चूर्ण कर सहतमें मिलाकर गोली बनावे इन गोलियोंके सेवनसे बैठा हुआ स्वर कोयलकी आवाजवाला होजाता है ॥ १२६ ॥

इति स्वरभेदसंग्रहचिकित्सा

अथारोचकस्यानुभूतचिकित्सा

विड्चूर्णमधुसंयुक्तो रसो दाडिमसम्भवः ।
असाध्यामपि संहन्यादरुचिं वक्त्रधारितः ॥ १२७ ॥

अर्थ–मनयारी नमकका चूर्ण सहत और अनारदानेका रस मिलाकर खानेसे असाध्य अरुचिभी दूर होतीहै ॥ १२७ ॥

अन्यच्च

शृङ्गवेररसं वापि मधुना सह योजयेत् ।
अरुचिश्वासकासघ्नं प्रतिश्यायकफापहम् ॥ १२८ ॥

अर्थ–अदंरकका रस सहत मिलाकर चाटनेसे अरुचि, श्वास, खांसी, जुकाम, कफ आदि शीघ्र नष्ट होजाते हैं ॥ १२८ ॥

अन्यच्च

द्वे पले दाडिमाम्लस्य खंड दद्यात्पलत्रयम् ।
त्रिसुगन्धि पलं चैकं चूर्णमेकत्र कारयेत् ॥ १२९ ॥
तच्चूर्णं मात्रया भुक्तमरोचकहरं परम् ॥ १३० ॥

अर्थ--आठ तोले अनारदाना खट्टा, मिश्री या खांड १२ तोले दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, चार २ तोले इनका चूर्णकर सेवन करनेसे अरुचि नष्ट होती है ॥ १२९ ॥ १३० ॥

इत्यरोचकस्य संग्रहचिकित्सा

अथ छर्दिरोगस्यानुभूतचिकित्सा

चन्दनेनाक्षमात्रेण संयोज्यामलकीरसम् ।
पिबेन्माक्षिकसंयुक्तं छर्दिस्तेन निवर्त्तते ॥ १३१ ॥

अर्थ--सफेदचन्दनका चूरा १ तोला आंवलेका रस ४ तोला और सहत एक तोला इनको मिलाकर पीनेसे छर्दि अर्थात् उबकाई बन्द होती है ॥ १३१ ॥

अन्यच्च

हरीतकीनां चूर्णन्तु लिह्यान्माक्षिकसंयुतम् ।
अधोभागे कृते दोषे छर्दिः क्षिप्रं निवर्त्तते ॥ १३२ ॥

अर्थ--हैड़को चूर्ण कर सहत मिलाकर चाटनेसे छर्दि अर्थात् कय बन्द होतीहै तथा पेटमें होनेवाले विकार नष्ट होते हैं ॥ १३२ ॥

अन्यच्च

क्वाथः पर्पटजःपीत सक्षौद्रश्छर्दिनाशनः ॥ १३३ ॥

अर्थ—केवल पित्तपापड़ेका काढा कर सहत मिलाकर पीनेसे कय (वमन) नष्ट होती है ॥ १३३ ॥

अन्यच्च

एलाप्रियंगुमुस्तानि कोलमज्जा च पिप्पली ।
श्रीचंदनं तथा लाजा लवंगं नागकेशरम् ॥ १३४ ॥
एतच्चूर्णीकृतं सर्वं सिताक्षौद्रयुतं लिहेत् ।
वातपित्तकफोद्भूतां छर्दिं हन्त्यतिवेगतः ॥ १३५ ॥

अर्थ- छोटी इलायचीके बीज, फूलप्रियंगु, नागरमोथा, बेरकी गुठली, पीपल, सफेद चंदन, खील, लौंग, नागकेसर इन औषधियोंको कपड़छान कर मिश्री और सहत मिलाकर खानेसे वात पित्त और कफसे उत्पन्न हुई वमन शीघ्र नष्ट होती है ॥ १३४ ॥ १३५ ॥

अन्यच्च

अजाजीधान्यपथ्याभिः सक्षौद्राभिः कटुत्रिकैः ।
एभिः सार्द्धं भस्मसूतः सेव्यो वान्तिप्रशान्तये ॥ १३६ ॥

अर्थ—जीरा, धनिया और हैड़, इनका चूर्ण कर और सोंठ, मिरच, पीपल, इनका भी चूर्ण कर चूर्णसे आधा पारेका भस्म सहतमें मिलाकर चाटनेसे वमन दूर होती है ॥ १३६ ॥

अन्यच्च

अश्वत्थवल्कलं शुष्कं दग्ध्वा निर्वापितं जले ।
तत्तोयपानमात्रेण छर्दिं जयति दुस्तराम् ॥ १३७ ॥

अर्थ--सूखी हुई पीपलकी छालको जलाकर पानीमें मिलाकर उस पानीको छानकर पीनेसे असाध्य छर्दि दूर होतीहै ॥ १३७ ॥

अन्यच्च

यष्टयाह्वं चन्दनोपेतं सम्यक्क्षीरप्रपेषितम् ।
तेनैवालोडय पातव्यं रुधिरच्छर्दिनाशनम् ॥ १३८ ॥

अर्थ--मुलहटी और सफेद चन्दन काचूरा इनको दूधमें पीसकर मिलाकर पीनेसे खूनकी वमन भी दूर हो जाती है ॥ १३८ ॥

इति छर्दिरोगस्य चिकित्सा

अथ तृष्णारोगस्यानुभूतचिकित्सा

आम्रजम्बूकषायं वा पिबेन्माक्षिकसंयुतम् ।
छर्दिं सर्वां प्रणुदति तृष्णाश्चैवापकर्षति ॥ १३९ ॥

अर्थ--आमका फल और जामुनके फलको पकाकर सहत मिलाकर पीनेसे वमन और प्यास दूर होती है ॥ १३९ ॥

अन्यच्च

वटशुङ्गासितालोध्रदाडिमं मधुकं मधु ।
पिबेत्तंडुलतोयेन छर्दितृष्णानिवारणम् ॥ १४० ॥

अर्थ--बड़के अंकुर और मिश्री, पठानीलोध, अनारदाना, मुलहटी और सहत इनको चावलोंके धोवनके पानीके साथ पीनेसे वमन और प्यास आदि रोग नष्ट होते हैं ॥ १४० ॥

इति तृष्णारोगस्य संग्रहचिकित्सा

अथ मूर्च्छारोगस्यानुभूतचिकित्सा

कोलमज्जोषणोशीरकेशरं शीतवारिणा ।
पीतं मूर्च्छां जयेल्लीढ्वा कृष्णां वा मधुसंयुताम् ॥ १४१ ॥

अर्थ--बेरकी गुठली काली मिरच खस नागकेसर इनका चूर्ण कर ठंडे जलके साथ पीनेसे शीघ्रही मूर्च्छा अर्थात् बेहोशी दूर होती है, अथवा पीपलका चूर्णकर सहत मिलाकर चाटनेसे मूर्च्छा दूर होतीहै ॥ १४१ ॥

अन्यच्च

महौषधामृताक्षुद्रापौष्करग्रन्थिकोद्भवम् ।
पिबेत्कणायुतं क्वाथं मूर्च्छायेषु मदेषु च ॥ १४२ ॥

अर्थ--सोंठ गिलोय कटेली पोहकरमूल पीपलामूल इनका काढ़ा कर पीपलका चूंण मिलाकर पीनेसे मूर्च्छारोग और मदरोगादि नष्ट होते हैं ॥ १४२ ॥

अन्यच्च

पिबेद्दुरालभाक्वाथं सघृतं भ्रमशान्तये ॥ १४३ ॥

अर्थ--जवासे का काढा घी मिलाकर पीनेसे भ्रमादि रोग नष्ट होते हैं ॥ १४३ ॥

इति मूर्च्छारोगस्य चिकित्सा

अथ मदात्ययरोगस्यानुभूतचिकित्सा

सौवर्च्चलमजाज्यश्च वृक्षाम्लं साम्लवेतसम् ।
त्वगेलामरिचार्द्धांशं शर्कराभागयोजितम् ॥ १४४ ॥
हितं लवणमष्टाङ्गमग्निसन्दीपनं परम् ।
मदात्यये कफप्राये दद्यात्स्रोतोविशोधनम् ॥ १४५ ॥

अर्थ--सौवर्चलनमक १ तोला जीरा १ तोला डांसरिया १ तोला अमलवेत १ तोला दालचीनी ६ मासा छोटी इलायची ६ मासा काली मिरच ६ मासा मिश्री ४ तोला इन सब औषधियोंको कूटकर चूर्ण बनावे इसका नाम अष्टांगलवण है यह अग्निको बढाता है मदात्ययरोग और कफके विकारको नष्ट करताहै स्रोतोंको साफ करताहै ॥ १४४ ॥ १४५॥

अन्यच्च

शंखचूर्णरजो घ्राणात्स्वल्पं मदमपोहति ॥ १४६ ॥

अर्थ—शंखका चूर्ण सूँघनेसे थोडासा जो मदका विकार हो वह नष्ट हो जाता है ॥ १४६ ॥

इति मदात्ययरोगस्य चिकित्सा

अथ दाहरोगस्यानुभूतचिकित्सा

यत्पित्तज्वरदाहोक्तं दाहेतत्सर्वमिष्यते ॥ १४७ ॥

अर्थ—जो पितज्वरदाहमें चिकित्सा है वह सब दाहरोगमें भी श्रेष्ठ जानना ॥ १४७ ॥

अन्यच्च

सुप्याद्दाहार्दितोऽम्भोजकदलीदलसंस्तरे ॥ १४८ ॥

अर्थ—दाहवाला मनुष्य कमल और केलेके पत्तोंको बिछाकर सोवे तो दाह शांत हो जाताहै ॥ १४८ ॥

फलिनीलोध्रसेव्याम्बु हेमपत्रं कुटन्नटम् ।
कालीयकरसोपेतं दाहे शस्तं प्रलेपनम् ॥ १४९ ॥

अर्थ—फूलप्रियंगु पठानी लोध खस नेत्रवाला नागकेसर तेजपात नाग-रमोथा सफेद चंदन इनको जलमें पीसकर लेप करने से दाह की शांति होती है ॥ १४९ ॥

इति दाहरोगस्य संग्रह चिकित्सा

अथोन्मादरोगस्यानुभूतचिकित्सा

श्वेतोन्मत्तोत्तरदिङ्मूलसिद्धस्तु पायसः ।
गुडाज्यसंयुतो हन्ति सर्वोन्मादांस्तु दोषजान् ॥ १५० ॥

अर्थ-सफेद धतूरेकी जड़को उत्तरदिशाको मुँहकरके उखाडे उसका ी खीर बनावे गुड और घी प्रमाणसे डाले इसको खानेसे सर्व प्रकारका उन्माद अर्थात् पागलना दूर होता है ॥ १५० ॥

अन्यच्च

अपक्वचटकी क्षीरपीतोन्मादविनाशनी ॥ १५१ ॥

अर्थ--कम पकी चिरमटी दूधके साथ पीनेसे उन्माद रोगको नाश करने वाली है ॥ १५१ ॥

अन्यच्च

ब्राह्मीरसवचाकुष्ठशंखपुष्पीभिरेव च ।
पुराणं मेध्यमुन्मादग्रहापस्मारनुद्घृतम् ॥ १५२ ॥

अर्थ--ब्राह्मीबूटीका रस और वचकूट और शंखपुष्पीका रस पुराना ी इनसबको कूटकर अर्क निकाल उस अर्कको घीमें डाल अग्निमें कावे जब अर्क जल जाय और घी रहे तो उतार लेवे इस घीके सेवनसे ्माद रोग नष्ट होता है ॥ १५२ ॥

इत्युन्मादरोगस्य चिकित्सा

अथापस्माररोगस्यानुभूतचिकित्सा

मनोह्वा तार्क्ष्यजश्चैव शकृत्पारावतस्य च ।
अञ्जनं हन्त्यपस्मारमुन्मादञ्च विशेषतः ॥ १५३ ॥

अर्थ--शुद्ध मैनशिल रसोत और कबूतरकी बीट इनको मिलाकर अंजन करनेसे (अपस्मार) अर्थात् मिरगी और उन्माद पागलपन नाश होता है । ॥ १५३ ॥

यः खादेत्क्षीरभक्ताशी माक्षिकेण वचारजः ।
अपस्मारं महाघोरं सुचिरोत्थं जयेद्ध्रुवम् ॥ १५४ ॥

अर्थ--जो दूध युक्त भोजन करनेवाला मनुष्य सहतके संग वचका चूर्ण सेवन करे तो असाध्य और बहुत दिनोंका भी मृगीरोग नष्ट होवे ॥ १५४ ॥

अन्यच्च

ब्राह्मीरसेश्च मधुना सर्वापस्मारभेषजम् ॥ १५५ ॥

अर्थ- केवल ब्राह्मीबूटीका रसही सहत मिलाकर सेवन करनेसे सब प्रकारके मृगीरोगको नाश करता है ॥ १५५

इत्यपस्माररोगस्य चिकित्सा

अथ वातव्याधिरोगस्यानुभूतचिकित्सा

रास्नामृतामहादारुनागरैरंडजं शृतम् ।
सप्तधातुगते वाते सामे सर्वांगजेपिबेत् ॥ १५६ ॥

अर्थ--रास्ना, गिलोय, देवदारु, सोंठ, अरंडकी जड़ इनका का[ढ़ा] सप्तधातुगत वायु, आमवात, सर्वांगगतवायुके रोगमें पीना चाहिये॥ १५[६]

अन्यच्च

रास्नागोक्षुरकैरंडदेवदारुपुनर्नवाः ।
गूडूच्यारग्वधौ चैव क्वाथ एषां विपाचयेत् ॥ १५७ ॥
शुंठीचूर्णेन संयुक्तः पिबेज्जंघाकटिग्रहे ।
पार्श्वपृष्ठोरुपीडायामामवाते सुदुस्तरे ॥ १५८ ॥

अर्थ-रास्ना, गोखरु, अरंडकी जड़, देवदारु, सांठी, गिलोय और अमलतासका गूदा इन औषधियोंका काढा कर सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे जंघा और कमरका रहजाना पसवाडे पीठ उरु इनमें दर्दका होना आमवातादि रोगको यह काढा पीनेसे दूर करताहै ॥ १५७ ॥ १५८ ॥

अन्यच्च

रास्ना द्विगुणभागा स्यादेकभागास्तथाऽपरे ।
धन्वयासबलैरंडदेवदारु शठी वचा ॥ १५९ ॥
वासको नागरं पथ्या चव्या मुस्ता पुनर्नवा ।
गुडूची वृद्धदारुश्च शतपुष्पा च गोक्षुरः ॥ १६० ॥
अश्वगन्धा प्रतिविषा कृतमालः शतावरी ।
कृष्णा सहचर श्चैव धान्याकं बृहतीद्वयम् ॥ १६१ ॥
एभिः कृतं पिबेत्क्वाथं शुंडीचूर्णेन संयुतम् ।
कृष्णाचूर्णेन वा योगराजगुग्गुलुनाऽथवा ॥ १६२ ॥
अजमोदादिना वापि तैलेनैरंडजेन वा ।
सर्वांगकम्पे कुब्जत्वे पक्षाघातेऽपबाहुके ॥ १६३ ॥

गृध्रस्यामामवाते च श्लीपदे चापतानके ।
अंडवृद्धौ तथाऽऽध्माने जंघाजानुगतेर्दिते ॥ १६४ ॥
शुक्रामये मेढ्ररोगे वंध्यायोन्याशयेषु च ।
महारास्नादिराख्यातोब्रह्मणा गर्भकारणम् ॥ १६५ ॥

अर्थ-रास्ना दो भाग, धमासा, खरेंटी, अरंडकी जड़, देवदारु, कचूर वच, वांसा, सोंठ, हैड़की छाल, चव्य, नागरमोथा, सांठकी जड़, गिलोय विधारा, सोंफ, गोखरु, असगंध, अतीस, अमलतासका गूदा, शतावर, छोटी पीपल, पीपावाँसा, धनिया, छोटी और बडी कटेली, यह औषध एक २ भाग लेना इनका काढा कर सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे वा पीपलका चूर्ण वा योगराजगूगलके साथ वा अजमोदके चूर्णके संग वा अरंडके तेलके साथ पीनेसे सर्वांगका काँपना, कुवडापन, पक्षाघात, अपबाहुकरोग, गृध्रसीरोग, गठियावायु, श्लीपदरोग, अपतानकरोग, अंडवृद्धि रोग, अफरा, जंघाजानुकी पीड़ा, शुक्रके दोष, लिंगके रोग, वंध्याकेयोनिदोष और गर्भाशयके रोगभी दूर होते हैं, ब्रह्मदेवने गर्भस्थापनेके कारण यह महारास्नादि काढा कहा है ॥ १५९ ॥ १६५ ॥

अन्यच्च

नागरैरंडयोः क्वाथः क्वाथ इन्द्रयवस्य वा ।
हिंगुसौवर्चलोपेतो वातशूलनिवारणः ॥ १६६ ॥

अर्थ-सोंठ, अरंडकी जड़, इनका काढा कर हींग, काला नमक डालकर पीनेसे वायुका शूल दूर होता है वा इन्द्र जौ के काढेमें

हींग कालानमक, मिलाकर पीनेसे दूर होताहै ॥ १६६ ॥

अथ योगराजगुग्गुलुः

चित्रकं पिप्पलीमूलं यवानीं कारवीं तथा ।
विडंगान्यजमोदां च जीरकं सुरदारु च ॥ १६७ ॥
चव्यैलासैन्धवं कुष्ठं रास्नागोक्षुरधान्यकम् ।
त्रिफलामुस्तकं व्योषं त्वगुशीरं यवाग्रजम् ॥ १६८ ॥
तालीशपत्रं पत्रञ्च श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ।
यावन्त्येतानि चूर्णानि तावन्मात्रन्तु गुग्गुलुम् ॥ १६९ ॥
सम्मर्द्य सर्पिषा गाढस्निग्धे भांडे निधापयेत् ।
ततो मात्रां प्रयुञ्जीत यथेष्टाहारवानपि ।
योगराज इति ख्याते योगोऽयममृतोपमः ॥ १७० ॥
आमवाताढचवातादीन्क्रिमिदुष्टव्रणानपि ।
प्लीहगुल्मोदरानाहदुर्नामानि विनाशयेत् ॥ १७१ ॥
अग्निञ्च कुरुते दीप्तं तेजोवृद्धिं बलं तथा ।
वातरोगाञ्जयत्येष सन्धिमज्जागतानपि ॥ १७२ ॥

अर्थ--चीतेकी छाल, पीपलामूल, अजवायन, कलौंजी, वायविडंग, अजमोद, कालाजीरा और सफेद जीरा, देवदारु, चव्य, छोटी इलायची, सेंधानमक, कूठ, रास्ना, गोखरु, धनिया, हैड, बहेडा, आंवला नागर-मोथा, सोंठ, मिरच, पीपल, दालचीनी, खस, इन्द्रजौ, तालीशपत्र, तेजपात, इन औषधियोंको समानभाग लेकर चूर्ण करे। चूर्णके बराबर शुद्धगूगल लेवे; सबको मिलाकर घी डालकर खूब कूटे; चिकने पात्रमें

रक्खे यथायोग्य मात्रा खावे। इसका नाम योगराज है योगोंमें अमृततुल्य है। गठियावायु, आढ्यवात, पेटमें कृमिका होना, फोडे फुनिसियोंका होना, तिल्ली, वायुगोला, पेटके रोग, आनाह रोग, बवासीर आदि रोग इसके सेवनसे नष्ट होते हैं, अग्नि चैतन्य होता है। तेज, बलकी वृद्धि होतीहै। सन्धिमज्जामें भी जो वातरोग हैं उनको यह जीतताहै ॥ १६७-१७२ ॥

अथ नारायणतैलम्

अश्वगंधां बलां बिल्वं पाटलां बृहतीद्वयम्।
श्वदंष्ट्रातिबले निम्बं स्योनाकं च पुनर्नवाम् ॥ १७३ ॥
प्रसारिणीमग्निमंथं कुर्य्याद्दश पलं पृथक्।
चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा पादशेषं भृतं नयेत् ॥ १७४ ॥
तैलाढकेन संयोज्य शतावर्या रसाढकम्।
क्षिपेत्तत्र च गोक्षीरं तैलात्तस्माच्चतुर्गुणम् ॥ १७५ ॥
शनैर्विपाचयेदेभिः कल्कैर्द्विपलिकैः पृथक्।
कुष्ठैलाचंदनं मूर्वा वचा मांसी ससैन्धवैः ॥ १७६ ॥
अश्वगंधाबलारास्नाशतपुष्पेंद्रदारुभिः।
पर्णीचतुष्टयेनैव तगरेणैव साधयेत् ॥ १७७ ॥
तत्तैलं नावनेऽभ्यंगे पाने वस्तौ च योजयेत्।
यथा नारायणो देवो दुष्टदैत्यविनाशनः।
तथैव वातरोगाणां नाशनं तैलमुत्तमम् ॥ १७८ ॥

अर्थ–असगंध, गंगेरनकी छाल, बेलगिरी, पाढल, छोटीकटेली और बड़ीकटेली; गोखरू, कंघी, नींबकी छाल, अरलुकी छाल, सांठकी जड, खीप, अरनी इन ओषधियोंको चालीस २ तोले लेवे ६४ सेर जलमें पकावे; जब चौथाई भाग रहजावे तब उतारलेवे, चारसेर तिलका तैल डाले और चार सेर शतावरका रस डाले और गौका दूध १६ सेर डाले मंदमंद अग्निसे पकावे, इन औषधियोंका कल्क कर मिला देवे कूठ, छोटी इलायची, सफेदचन्दन, मूर्वा, वच, जटामांसी, सेंधानमक असअन्ध, गंगेरनकी छाल, रास्ना; सौंफ, इन्द्रयव, देवदारु, सालपर्णी, पृष्ठपर्णी, मासपर्णी, मुद्गपर्णी, तगर, इन औषधियोंको आठ २ तोले डाले फिर अच्छी तरह पकावे, जब तेल मात्र रहजावेतो उतारलेवे, इस तलेको नारायणतैल कहते हैं । इस तैलको नाकमें डालना, शरीरमें मालिश करना, पीना, तथा बस्तिकर्ममें योजना करे। जैसे नारायण भगवान् दुष्टदैत्योंका नाश करतेहैं उसीप्रकार यह नारायणतैलभी सम्पूर्ण वातरोगोंका नाश करता है ॥ १७३-१७८ ॥

इति वातरोगस्य चिकित्सा

अथ वातरक्तस्यानुभूत-चिकित्सा

वत्सादन्युद्भवः क्वाथः पीतो गुग्गुलुसंयुतः ।
समीरणसमायुक्तं शोणितं सम्प्रसाधयेत् ॥ १७९ ॥

अर्थ–इन्द्रायणकी जड़का क्वाथ शुद्ध गूगलके साथ पीनेसे वायुसे खराब हुआ जो खून सो शुद्ध होताहै ॥ १७९ ॥

अन्यच्च

लीढ्वा मुन्डीतिकाचूर्णं मधुसर्पिःसमायुतम् ।
छिन्नाक्काथं पिबन्हन्ति वातरक्तं सुदुस्तरम् ॥ १८० ॥

अर्थ–मुँडीका चूर्ण कर सहत और घी मिलाय चाटनेसे और गिलोयका काढा पीनेसे वातरक्त दूर होता है ॥ १८० ॥

अन्यच्च

त्रिवृद्विदारीक्षुरकक्वाथो वातास्रनाशनः ॥ १८१ ॥

अर्थ—निसोथ, विदारीकंद, तालमखाना इनका काढा वायुसे बिगड़ा. जो रक्त उसको नष्ट करता है ॥ १८१ ॥

अन्यच्च

पटोलकटुकाभीरुत्रिफलाऽमृतसाधितम् ।
क्वाथं पीत्वा जयेज्जन्तुः सदाहं वातशोणितम् ॥ १८२ ॥

अर्थ- पटोलपत्र, कुटकी, शतावर, हैड, बहेडा, आंवला, गिलोय इनका काढा पीनेसे दाहकेसहित जो वातरक्त है वह दूर होताहै ॥१८२॥

अन्यच्च

मंजिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचा दारु निशाऽमृता ।
निम्बश्चैषां कृतः क्वाथो वातरक्तविनाशनः ॥ १८३ ॥

अथ–मंजीठ, हैड़, बहेड़ा, आंवला, कुटकी, वच, देवदारु, हलदी, गिलोय, निंबकी छाल इन औषधियोंका काढा वायुसे बिगड़े हुए खूनको साफ करता है ॥ १८३ ॥

इति वातरक्तस्य संग्रहचिकित्सा

अथोरुस्तम्भानुभूतचिकित्सा

त्रिफलाचव्यकटुकं ग्रन्थिकं मधुना लिहेत् ।
ऊरुस्तम्भविनाशाय पुरं मूत्रेण वा पिवेत् ॥ १८४ ॥

अर्थ -हैड़ वहेड़ा आंवला, चव्य, सोंठ मिरच पीपल और पीपलामूल, इन औषधियोंको समानभाग लेकर चूर्ण करे, सहतके संग चाटनेसे ऊरुस्तम्भ नष्ट होताहै वा गोमूत्रके संग शुद्ध गूगल सेवन करनेसे नष्ट होता है ॥ १८४ ॥

अन्यच्च

शिलाजतु गुग्गुलुं वा पिप्पलीमथ नागरम् ।
ऊरुस्तम्भे पिबेन्मूत्रैर्दशमूलीरसेन वा ॥ १८५ ॥

अर्थ--शुद्धशिलाजित वा शुद्ध गूगल वा पीपल वा सोंठ इनका चूर्ण कर उरुस्तम्भके नाश करनेके वास्ते गोमूत्रसंग पीवे वा दशमूलके अर्कके साथ पीवे ॥ १८५ ॥

इत्यूरुस्तम्भसंग्रहचिकित्सा

अथामवातस्यानुभूतचिकित्सा

शठीविश्वौषधीकल्कं वर्षाभूक्काथसंयुतम् ।
सप्तरात्रं पिबेज्जन्तुरामवातविनाशनम् ॥ १८६ ॥

अर्थ--कचूर और सोंठ इनका करक कर सांठकी जडका क्वाथ कर सातदिन पीनेसे आमवात अर्थात् गठिया वायु नष्ट होता है ॥ १८६ ॥

अन्यच्च

शुंठीगौक्षुरकः क्वाथः प्रातः प्रातर्निषेवितः ।
सामवाते कटीशूले पाचनो रुक्प्रणाशनः ॥ १८७ ॥

अर्थ–सोंठ और गोखरु इनका काढाकर प्रातःकाल (सबेरे) ही पियाहुआ आम अर्थात् गठिया वायुको नष्ट करता है और पाचन है रोगका नाश करता है ॥ १८७ ॥

अन्यच्च

कर्षनागरचूर्णस्य कांजिकेन पिबेत्सदा ।
आमवातप्रशमनं कफवातहरं परम् ॥ १८८ ॥

अर्थ--एकतोला सोंठके चूर्णको कांजीके साथ पोनेसे आमवात अर्थात् गठिया वायु नष्ट होताहै तथा वात, कफ दूर होते हैं ॥ १८८ ॥

अन्यच्च

शतपुष्पा विडङ्गञ्च सैन्धवं मरिचं तथा ।
चूर्णमुष्णाम्बुना पीतमग्निसन्दीपनं परम् ॥ १८९ ॥

अर्थ–सोंफ, वायविडंग, सेंधानमक, काली मिरच, इनका चूर्ण कर गरम जलके संग पीनेसे अग्निको बढाताहै ॥ १८९ ॥

अन्यच्च

रास्नां गुडूचीमेरंडं देवदारुमहौषधम् ।
सर्वांगिके गते वाते सामे सन्ध्यस्थिमज्जगे ॥ १९० ॥

अर्थ--रास्ना, गिलोय; अरंडकी जड़, देवदारु, सोंठ इनका काढा सर्वांगगतवायु और गयठियावायु, संधि और मज्जागत जो वात है उसका नाश करता है ॥ १९० ॥

इत्यामवातस्य चिकित्सा ।

अथ शूलरोगस्यानुभूतचिकित्सा

शंखचूर्णं सलवणं सहिंगु व्योषसंयुतम् ।
उष्णोदकेन तत्पीतं शूलं हन्ति त्रिदोषजम् ॥ १९१ ॥

अर्थ- शंखभस्मका चूर्ण, सेंधा नमक, हींग, सोंठ, काली मिरच, पीपल इन सबका चूर्ण कर गरमजलके साथ पीनेसे त्रिदोषकाभी शूल दूर होता है ॥ १९१ ॥

अन्यच्च

हिङ्गु त्रिकटुकं कुष्ठं यवक्षारोऽथ सैन्धवम् ।
मातुलुङ्गरसोपेतं प्लीहशूलापहं रजः ॥ १९२ ॥

अर्थ--हींग, सोंठ, काली मिरच, पीपल, जवाखार, कूठ, सेंधानमक इनका चूर्ण कर बिजोरे नीबूके रसके साथ सेवन करनेसे तिल्ली और शूल दूर हो जाता है ॥ १९२ ॥

विदारीदाडिमरसः सव्योषलवणान्वितः ।
क्षौद्रयुक्तो जयत्याशु शूलं दोषत्रयोद्भवम् ॥ १९३ ॥

अर्थ-विदारीकंद, पके हुए अनारका रस एक २ तोला और सोंठ ३ मासे कालीमिरच ३ मा० पीपल ३ मा० इन औषधियोंका चूर्ण कर सहत ४ मासे मिलाकर चाटनेसे तीनों दोषोंका शूलभी दूर होता है ॥ १९३ ॥

हरीतकीं त्रिकटुकं कुचिला हिंगु सैन्धवम् ।
गन्धकं च समं सर्वं वटीं कुर्य्यात्सुखावहाम् ॥ १९४ ॥
लघुकोलप्रमाणन्तु शस्यते प्रातरेव हि ।
एकैका वटिका ग्राह्या गुल्मशूलविनाशनी ॥ १९५ ॥

अर्थ–हैड़ छोटी, सोंठ-मिरच-पीपल, कुचला, हींग, सेंधानमक गंधक; इन सबको बराबर लेकर छोटे बेरके बराबर गोली बनावे एक गोली सवेरे ही सेवन करनेसे वायुगोला और शूल दूर होता है ॥ १९४ ॥ १९५ ॥

इति शूलरोगस्यानुभूत चिकित्सा ।

अथोदावर्त्तानाहानुभूतचिकित्सा

सव्योषः पिप्पलीमूलं त्रिवृद्दन्ती च चित्रकम् ।
तच्चूर्णं गुडसंमिश्रं भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥ १९६ ॥
एतद्‌गुडाष्टकं नाम बलवर्णाग्निवर्द्धनम् ।
उदावर्तप्लीहगुल्मशोथपांड्वामयापहम् ॥ १९७ ॥

अर्थ–सोंठ-मिरच-पीपल और पीपलामूल, निसोथ, जमालगोटेकी जड़, चित्रक, इन औषधियोंका चूर्ण कर गुड़ मिलाकर सवेरेही खानेसे बल और अग्निको बढाता है। इस चूर्णका नाम गुडाष्टक है। उदावर्त रोग और तिल्ली, वायुगोला सूजन, पांडु आदि रोगको दूर करता है ॥ १९६ ॥ १९७ ॥

वचाभयाचित्रकयावशूकान्सपिप्पलीकाति-
विषान्सकुष्ठान् ॥ उष्णाम्बुनानाहविमूढवाता–
न्पीत्वा जयेदाशु हि तोदनाशी ॥ १९८ ॥

अर्थ-वच, हैड, चीतेकी छाल, जवाखार, पीपल, अतीस, कूठ; इन औषधियोंका चूर्ण कर गरमजलके साथ सेवन करनेसे आनाहरोग अर्थात् अफरा और बडाहुआ वायु आदि रोग शीघ्र नष्ट होते हैं॥१९८॥

अथ गुल्मरोगस्यानुभूतचिकित्सा

वचाहरीतकी हिंगु सैन्धवं साम्लवेतसम् ।
यवक्षारं यवानीश्च पिबेदुष्णेन वारिणा ॥ १९९ ॥
एतद्धि गुल्मनिचयं सशूलं सपरिग्रहम् ।
भिनत्ति सप्तरात्रेण वह्नेर्वृद्धिं करोति च ॥ २०० ॥

अर्थ-वच, हैड, हींग, सेंधानक, अम्लवेत, जवाखार, अजवायन, इनका चूर्ण गरमजलके साथ पीनेसे गुल्म अर्थात् वायुगोला और शूल पेटका जकडारहना ये सातदिनके सेवन करनेसे नष्ट होते हैं और जठराग्निकी वृद्धि होती है ॥ १९९-२०० ॥

अन्यच्च

शरपुंखभस्म लवणं पथ्याचूर्णं समं द्वयम् ।
शाणप्रमाणमश्नीयाच्चूर्णं गुल्मगदापहम् ॥ २०१ ॥

अर्थ- सरफोंका घासकी राख कर उसमें सेंधानमक मिलाकर और दोनोंकी बराबर हैडका चूर्ण मिलाकर चार मासे खानेसे वायुगोलादि रोग नष्ट होते हैं ॥ २०१ ॥

अन्यच्च

स्वर्जिका शाणमाना स्यात्तावदेव गुडं भवेत् ।
उभयोर्वटिकां खादेद्गुल्मामयविनाशिनीम् ॥ २०२ ॥

अर्थ- राईका चूर्ण चारमासे और चारमासे गुड दोनोंको मिलाकर गोली बनाकर खानेसे वायुगोलेका रोग नष्ट होता है ॥ २०२ ॥

अन्यच्च

सुवर्चिका टङ्कमिता तत्समानार्द्रिकापि च ।
उभे भुञ्जीत युगपद्गुल्मामयनिवृत्तये ॥ २०३ ॥

अर्थ--सोरा चार मासे और चार मासे अदरक दोनोंको मिला सेवन करनेसे वायुगोलादि रोग नष्ट होतेहैं ॥ २०३ ॥

अन्यच्च

गुल्मी कुमारिकामांसं कर्षार्द्ध गोधृतान्वितम् ।
शुक्तिचूर्णस्य गुटिकां टङ्कमात्रां सुवेष्टयेत् ॥ २०४ ॥

अर्थ -मनुष्य ६ मासे घीकुमारके गूदेको ६ मासे घीमें मिला और चार मासे सीपीकी राख मिलाकर खानेसे गुल्मरोगवालेका वायुगोला दूर होता है ॥ २०४ ॥

इति गुल्मरोगस्य चिकित्सा

अथ हृद्रोगस्यानुभूतचिकित्सा

चूर्णं पुष्करजं लिह्यान्माक्षिकेण समायुतम् ।
हृच्छूलश्वासकासघ्नं क्षयहिक्कानिवारणम् ॥ २०५ ॥

अर्थ-पोहकरमूलका चूर्ण सहत मिलाकर खानेसे, हृदयका शूल, श्वास, खांसी, राजयक्ष्मा, हिचकी आदि रोग दूर होते हैं ॥ २०५ ॥

अन्यच्च

दशमूलकृतः क्वाथः सयवक्षारसैंधवः ।
हृद्रोगगुल्मशूलार्तिकासं श्वासं च नाशयेत् ॥ २०६ ॥

अर्थ--दशमूलका काढा कर उसमें जवाखार, सेंधा नमक मिलाकर सेवन करनेसे हृदयरोग, गोला, शूल, खाँसी, श्वास आदि रोग नाश होते हैं ॥ २०६ ॥

पार्थस्य वल्कस्वरसेन पक्वं शस्तं -
घृतं सर्वहृदामयेषु ॥ २०७ ॥

अर्थ- अर्जुन वृक्षकी छालके स्वरसमें घी पकाया हुआ सब प्रकारके हृदयरोगोंको नष्ट करता है ॥ २०७ ॥

इति हृद्रोगस्यानुभूतचिकित्सा ।

अथ मूत्रकृच्छ्रस्यानुभूतचिकित्सा

एलाहिङ्गुयुतं क्षीरं सर्पिर्मिश्रं पिबेन्नरः ।
मूत्रदोषविशुद्धार्थं शुक्रदोषहरश्च तत् ॥ २०८ ॥

अर्थ- छोटी इलायची, हींग, और घी इनको दूध मिलाकर पीनेसे मूत्रका कष्टसे आना तथा शुक्रमिला हुआ आना आदि रोग नष्ट होते हैं ॥ २०८ ॥

अन्यच्च

सितातुल्यो यवक्षारः सर्वकृच्छ्रविनाशनः ।
निदिग्धिकारसो वापि सक्षौद्रः कृच्छ्रनाशनः ॥ २०९ ॥

अर्थ ·मिश्रीके बराबर जवाखार मिलाकर खानेसे मूत्रका कष्टसे उतरना दूर होता है । वा कटेलीका रस सहत मिलाकर सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होता है ॥ २०९ ॥

अन्यच्च

गुडेनामलकं वृष्यं श्रमघ्नं तर्पणं परम् ।
पित्तासृग्दाहशूलघ्नं मूत्रकृच्छ्रविनाशनम् ॥ २१० ॥

अर्थ–गुड और आँवलेको बराबर लेकर मिलाकर खानेसे यह वृष्य है परिश्रम (थकावट) को दूर करता है रुचि उत्पन्न होतीहै और पित्त खूनकी व्याधि, जलन शूल, मूत्रकृच्छ्रादि रोग नष्ट होतेहैं ॥ २१० ॥

अन्यच्च

एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनां
चूर्णानि तंडुलजलैर्लुलितानि पीत्वा ।
यद्वा गुडेन सहितान्यवलिह्य सम्य--
गासन्नमृत्युरपि जीवति मूत्रकृच्छ्री ॥ २११ ॥

अर्थ--छोटी इलायची, पत्थरबेर, शुद्ध शिलाजीत, पीपल, इनका चूर्ण चावलके पानीमें मिलाकर पीनेसे वा गुडमें अच्छी तरह अवलेहसा कर सेवन करनेसे मरणयोग्य जो मूत्रकृच्छ्रवाला मनुष्य है वह भी प्रयोग से जीवता है ॥ २११ ॥

इति मूत्रकृच्छ्री चिकित्सा ।

अथ मूत्राघातस्यानुभूतचिकित्सा

कल्कमेर्वारुबीजानामक्षमात्रं ससैन्धवम् ।
धान्याम्लयुक्तं पीत्वैव मूत्राघाताद्विमुच्यते ॥ २१२ ॥

अर्थ--ककड़ीके बीज एक तोला, एक तोला सेंधानमक दोनोंको पीस काँजीके साथ मिलाकर पीनेसे मूत्राघात रोग नष्ट होता है ॥ २१२ ॥

त्रिकटुत्रिफलामुस्तं गुग्गुलुञ्च समाक्षिकम् ।
गोक्षुरक्काथसंयुक्तं गुटिकां भक्षयेद्बुधः ॥ २१३ ॥
प्रमेहं मूत्रकृच्छ्रञ्च मूत्राघातं तथैव च ।
अश्मरीं प्रदरञ्चैव नाशयेदविकल्पतः ॥ २१४ ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, हैड़, बहेड़ा आँवला, नागरमोथा; शुद्ध-गूगल, सहत और गोखरूके काढेमें गोली बनाना इन गोलियोंके खानेसे प्रमेह, मूत्रका कष्टसे उतरना, मूत्राघात पथरी, प्रदररोगादि शीघ्रही दूर होते हैं ॥ २१३ ॥ २१४ ॥

इति मूत्राघातस्यानुभुतचिकित्सा

अथाश्मरीरोगस्यानुभूतचिकित्सा

एलामधुकगोकंटरेणुकैरंडवासकः ।
कृष्णाश्मभेदसहितः क्काथ एषां सुसाधितः ।
शिलाजतुयुतः पेयः शर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ॥ २१५ ॥

अर्थ--छोटी इलायची, मुलहटी, गोखरु, रेणुकका बीज, अरंडकी जड़, पियावाँसा, पीपल, पत्थरबेर; इन औषधियोंका काढ़ाकर शिलाजीत मिलाकर पीनेसे शर्करा अर्थात् मूत्रमें बालूकेसे किणके मिले हुए आने और पथरी मूत्रकृच्छ्र आदि रोग नष्ट होते हैं ॥ २१५ ॥

अन्यच्च

समूलगोक्षुरक्वाथः सितामाक्षिकसंयुतः ।
नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणि तथा चोष्णसमीरणम् ॥ २१६ ॥

अर्थ-गुडसहित गोखरूके वृक्षका काढा मिश्री और सहत मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र, पथरी, उष्णवात अर्थात् सुजाक आदि रोग नष्ट होते हैं ॥ २१६ ॥

इत्यश्मरीरोगस्य चिकित्सा ।

अथ प्रमेहरोगस्यानुभूतचिकित्सा

फलत्रिकाब्ददार्वीणां विशालायाः शृतं पिबेत् ।
निशाकल्कयुतं सर्वं प्रमेहविनिवृत्तये ॥ २१७ ॥

अर्थ- हैड़ बहेडा, आँवला, नागरमोथा, दारुहलदी, इन्द्रायणकी जड, इन औषधियोंका काढाकर हलदीका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सब प्रकारके प्रमेह रोग दूर होते हैं ॥ २१७ ॥

अन्यच्च

सर्वमेहहरो धात्र्या रसः क्षौद्रनिशायुतः ।
कषायस्त्रिफलादारुमुस्तकैरथवा कृतः ॥ २१८ ॥

अर्थ- आँवलेके रसमें सहत और हलदीका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सब प्रकारके प्रमेहोंको जीतता है अथवा हैड, बहेड़ा, आँवला, देवदारु, नागरमोथा इन औषधियोंका काढा भी सब प्रकारके प्रमेहों को जीतता है ॥ २१८ ॥

अन्यच्च

सक्षौद्रं रजनीचूर्णं लेह्यं निष्कद्वयं तथा ।
असाध्यं नाशयेन्मेहं विद्यावागीशको रसः ॥ २१९ ॥

अर्थ--चार मासे हलदीके चूर्णमें सहत मिलाकर चाटनेसे असाध्य प्रमेह भी इस विद्यावागीश रससे दूर होता है ॥ २१९ ॥

अन्यच्च

त्रिकटु त्रिफला तुल्यं गुग्गुलुश्च समांशिकम् ।
गोक्षुरक्वाथसंयुक्तां गुटिकां कारयेद्बुधः ॥ २२० ॥
प्रमेहान्वातरोगांश्च वातशोणितमेव च ।
मूत्राघातं मूत्रदोषं प्रदरं चाशु नाशयेत् ॥ २२१ ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, हैड बहेड़ा, आँवला, इन औषधिकोंका चूर्ण कर चूर्णके बराबर शुद्ध गूगल लेकर गोखरूके काढेमें गोली बनाना इन गोलियोंके सेवन करनेसे प्रमेहरोग वायुका रोग वायुसे खूनका बिगड़ना मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र प्रदररोगादि शीघ्र ही नष्ट होतेहैं ॥ २२० ॥ २२१ ॥

इति प्रमेहरोगस्यानुभूतचिकित्सा

अथ मेदरोगस्यानुभूतचिकित्सा

व्योषाग्नित्रिफलामुस्ताविडङ्गैर्गुग्गुलुं समम् ।
खादन्सर्वाञ्जयेद्व्याधीन्मेदः श्लेष्मामवातजान् ॥ २२२ ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, हैड बहेड़ा आँवला, नागरमोथा, वायविडंग, शुद्ध गूगल, इन औषधियोंको समानभाग लेकर चूर्ण कर उसमें गूगल मिलाकर गोली बना लेवे इन गोलियोंके सेवन करनेसे मेदरोग अर्थात् वायुसे शरीरको फूल जाना कफके रोगादि दूर होतेहैं ॥ २२२

अन्यच्च

प्रातर्मधुयुतं वारि सेवितं स्थौल्यनाशनम् ॥ २२३ ॥

अर्थ–प्रातःकाल पानीमें शहत मिलाकर पीनेसे कफसे फूला हुआ शरीर हलका हो जाता है ॥ २२३ ॥

अन्यच्च

धत्तूरपत्रस्य रसेनगाढमुद्वर्त्तनं स्थौल्यहरं प्रदिष्टम् ॥ २२४ ॥

अर्थ–धतूरेके पत्तोंका रस शरीरमें मलनेसे वायुसे फूला हुआ शरीर हलका होता है ॥ २२४ ॥

इति मेदरोगस्य चिकित्सा

अथोदररोगस्यानुभूतचिकित्सा

वातोदरी पिबेत्तक्रं पिप्पलीलवणान्वितम् ॥ २२५ ॥

अर्थ–वायुके उदरवाला अर्थात् जिस मनुष्यके वायुकरके पेटमें विकार होतो छाछमें पीपल और सेंधानमक मिलाकर पीनेसे सब प्रकारके विकार दूर होते हैं ॥ २२५ ॥

अन्यच्च

शर्करामरिचोपेतं स्वादु पित्तोदरी पिबेत् ॥ २२६ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके पित्त करके पेटमें विकार हो तो मिश्री और कालीमिरच छाछमें मिलाकर पीनेसे सब विकार शांत होतेहैं ॥ २२६ ॥

अन्यच्च

यमानीसैन्धवाजाजीव्योषयुक्तं कफोदरी ॥ २२७ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके कफ करके पेटमें विकार हो तो वह अजवायन, सेंधानमक, जीरा, सोंठ काली मिरच, पीपल, इनका चूर्ण छाछमें मिलाकर पीवे तो कफका उदर रोग दूर होता है ॥ २२७ ॥

अन्यच्च

सामुद्रसौवचलसैन्धवानि क्षारं यवानीमजमोदकञ्च ।
सपिप्पलीचित्रकश्रृङ्गवेरंहिङ्गु विडञ्चेतिसमानिकुर्य्यात्
एतानिचूर्णानिघृतप्लुतानिभुञ्जीतपूर्वकवलात्प्रशस्तं ।
सर्वोदरं गुल्ममजीर्णभुक्तं वायुप्रकोपंग्रहणीञ्च दुष्टाम् ।
अर्शांसि दुष्टानिचपांडुरोगं भगन्दरञ्चेतिनिहन्तिसद्यः

अर्थ–मनयारी नमक और काला नमक और सेंधानमक, जवाखार सज्जीखार, अजवायन, अजमोद, पीपल, चीतेकी छाल, सोंठ, हींग, वाय-विडंग इन औषधियोंको समान लेकर चूर्ण करे चूर्ण को घीमें मिलाकर भोजनके पहिले सेवन करनेसे सब प्रकारके पेटके विकार वायुगोला, अजीर्ण भोजनके बाद वायुका कोप होना, ग्रहणीरोग, बवासीरः पीलिया-रोग, भगन्दरादि रोग शीघ्रही नाश होते हैं ॥ २२८ ॥ २२९ ॥

अन्यच्च

अर्कपत्रं सलवणमन्तर्धूमं दहेत्ततः ।
मस्तुना तत्पिबेत्क्षारं गुल्मप्लीहोदरापहम् ॥ २३० ॥

अर्थ-आकके पत्ते और सेंधानमक दोनोंको किसी पात्रमें रखकर पात्रका मुह बन्दकर फूँकदेवे उस चूर्णको काँजी और छाछके संग पीनेसे वायुगोला तिल्लीआदि रोग दूर होते हैं तथा सज्जीखार व जवाखारके भी खानेसे ये रोग दूर होते हैं ॥ २३० ॥

अन्यच्च

रोहीतकाभयाक्षौद्रभावितं मूत्रमम्बु वा ।
पीतं सर्वोदरप्लीहमहार्शः क्रिमिगुल्मनुत् ॥ २३१ ॥

अर्थ–रुहेड़ वृक्षका फल और हैड का वक्कल दोनोंको गोमूत्र अथवा जल के साथ पीनेसे सब प्रकारके पेटके रोग तिल्ली प्रमेह, बवासीर, पेट में कीड़ोंका पड़ना, वायुगोला आदि रोग दूर होते हैं ॥ २४१ ॥

इत्युदररोगसंग्रहचिकिला

अथ शोथरोगस्यानुभूतचिकित्सा

पुनर्नवानिम्बपटोलशुंठीतिक्तामृतादार्वभयाकषायः ।
सर्वांगशोथोदरकासशूलं श्वासान्वितपांडुगदं निहन्ति

अर्थ–साँठकी जड़, निम्बकी छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय देवदारु हैडका वक्कल इन औषधियोंका काढाकर पीनेसे सब शरीरमें हुआ शोथ और उदररोग खाँसी शूल श्वास, पीलियाआदि रोग नष्ट होते हैं ॥ २३२ ॥

अन्यच्च

आर्द्रकस्य रसः पीतः पुराणगुड़मिश्रितः ।
अजाक्षीराशिनां शीघ्रं सर्वशोथहरो भवेत् ॥ २३३ ॥

अर्थ–अदरकके रसमें पुराना गुड मिलाकर पीनेसे और बकरीके दूध का सेवन करनेसे जल्दीही सब प्रकारका शोथ रोग दूर होताहै ॥२३३॥

अन्यच्च

विल्वपत्ररसं पूतं सोषणं श्वयथौ त्रिजे ।
विट्संगे चैव दुर्नाम्नि विद्यात्कामलास्वपि ॥ २३४ ॥

अर्थ-वेलके पत्तोंका रस वस्त्रमें छान खरलमें घोटकर सुखालेवे, उस चूर्णको सेवन करनेसे तीनों दोषोंसे उत्पन्न जो सूजन और दस्तका न आना, बवासीर, कमलवात आदि रोग नष्ट होते हैं ॥ २३४ ॥

अन्यच्च

गुडशुंठीपिप्पलीनां चूर्णं श्वयथुनाशनम् ।
आमाजीर्णप्रशमनं शूलघ्नं बस्तिशोधनम् ॥ २३५ ॥

अर्थ-गुड़, सोंठ, पीपल इनका चूर्ण कर सेवन करनेसे सूजन दूर होती है तथा बदहजमी, शूल आदि रोग दूर होते हैं, तथा बस्तिस्थान शुद्ध होता है ॥ २३५ ॥

अन्यच्च

वर्षाभूश्रृङ्गवेराभ्यां कल्को वा सर्वशोथजित् ॥ २३६ ॥

अर्थ-सांठीकी जड़ और अदरक दोनोंको पीसकर पानी मिलाकर पीनेसे सब प्रकारकी सूजन दूर होती है ॥ २३६ ॥

अन्यच्च

पुनर्नवा दारुनिशा निशा शुंठी हरीतकी ।
गुडूची चित्रकी भार्ङ्गी देवदारु च तैः शृतः ।
पाणिपादोदरमुखप्राप्तं शोथं निवारयेत् ॥ २३७ ॥

अर्थ -सांठकी जड़, दारुहलदी, हलदी सोंठ, हैड़, गिलोय, चीतेकी छाल भार्ङ्गी, देवदारु, इन औषधियोंका काढा हाथ, पैर, पेट, मुँह आदिपर हुए शोथ (सूजन) को दूर करता है ॥ २३७ ॥

अन्यच्च

फलत्रिकोद्भवं काथं गोमुत्रेणैव पाययेत् ।
वातश्लेष्मकृतं हन्ति शोथं वृषणसंभवम् ॥ २३८ ॥

अर्थ -हैड़, बहेड़ा, आंवला इन औषधियोंका काढ़ा गोमूत्र मिलाकर पीनेसे वायु और कफसे हुआ शोथ और अंडकोषोंकी सूजनको दूर करता है ॥ २३८ ॥

इति शोथरोगस्य संग्रहचिकित्सा

अथांत्रवृद्धिरोगस्यानुभूतचिकित्सा

राश्नाऽमृतावलायष्टीगोकंटैरंडजः शृतः ।
एरंडतैलसंयुक्तो वृद्धिमन्त्रोद्भवां जयेत् ॥ २३९ ॥

अर्थ--रास्ना, गिलोय, खरेंटी, मुलहटी, गोखरू, अरंडकी जड इन औषधियोंका काढ़ा अरंडका तैल मिलाकर पीने अंत्रवृद्धि अर्थात् अंतर्गत वायु जिससे अंडकोष बडे होते हैं, आदि रोग दूर होवें॥२३९॥

अन्यच्च

वचासर्षपकल्केन प्रलेपो वृद्धिनाशनः ॥ २४० ॥

अर्थ--वच और सरसोंको पीसकर लेप करनेसे अंत्रवृद्धिरोग नाश होता है ॥ २४० ॥

इत्यंत्रवृद्धिरोगस्य संग्रहचिकित्सा

अथ गलगंडगंडमालापचीग्रन्थ्यर्बुदस्यानुभूतचिकित्सा

कांचनारत्वचः क्वाथः शुंठीचूर्णेन नाशयेत् ।
गंडमालां तथा काथः क्षौद्रेणःवरुणत्वचः ॥ २४१ ॥

अर्थ–कचनार वृक्षकी छालका काढा कर उसमें सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे अथवा वरना वृक्षकी छालका काढा सहत मिलाकर पीनेसे गंडमालादि रोग शीघ्र नष्ट होते हैं ॥ २४१ ॥

अन्यच्च

स्वर्जिकामूलकक्षारः शंखचूर्णसमन्वितः ।
प्रलेपो विहितस्तीक्ष्णो हन्ति ग्रन्थ्यर्बुदादिकान् ॥ २४२ ॥

अर्थ–सज्जीखार और मूलीका खार और शंखका भस्म इनको पानी में मिलाकर लगानेसे ग्रन्थ्यर्बुद आदि रोग शीघ्रही नष्ट होते हैं, यह तीक्ष्ण लेप है ॥ २४२ ॥

अन्यच्च

हरिद्रालोध्रपत्तङ्गगृहधूममनः शिलाः ।
मधुप्रगाढो लेपोऽयं मेदोऽर्बुदहरः परः ॥ २४३ ॥

अर्थ–हलदी, पठानीलोध, लालचन्दन, घरका धुआं मैनशिल इनका चूर्ण कर सहत मिलाकर लेप करनेसे मेदरोग, अर्बुदआदि शीघ्र नष्ट होते हैं ॥२४३ ॥

इति गलगंडादिरोगाणां चिकित्सा

अथ श्लीपदरोगस्यानुभूतचिकित्सा

सप्ततांम्बूलपत्राणां कल्कं तप्तेन वारिणा ।
संसृष्टं लवणोपेतं सेवितं श्लीपदं हरेत् ॥ २४४ ॥

अर्थ–सात पानोंको गरम पानीमें पीसकर उसमें सेंधानमक मिलाक सेवन करनेसे श्लीपादि रोग अर्थात् पीलपाँव रोग नष्ट होताहै ॥ २४४

अन्यच्च

रजनीं गुडसंयुक्तां गोमूत्रेण पिबेन्नरः ।
वर्षोत्थं श्लीपदं हन्ति दद्रुकुष्ठं विशेषतः ॥ २४५ ॥

अर्थ– हल्दीका चूर्ण कर गुड़ मिलाकर गोमूत्र के संग सेवन करने एकवर्षसे हुआ श्लीपदरोग अर्थात् पीलपाँव रोग और दाद कुष्ठ आ रोग दूर होते हैं ॥ २४५ ॥

अन्यच्च

वर्षाभूत्रिफलाचूर्णं पिप्पल्या सह योजितम् ।
सक्षौद्रं श्लीपदे लिह्याच्चिरोत्थं श्लीपदं जयेत् ॥ २४६ ॥

अर्थ–साँठकी जड, हैड, बहेडा; आँवला और पीपल इनका चू कर सहत मिलाकर सेवन करनेसे बहुतदिनकाभी श्लीपद रोग आर्थ पीलपाँव रोग नष्ट होता है ॥ २४६ ॥

अन्यच्च

धत्तूरैरंडनिर्गुंडीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः ।
प्रलेपः श्लीपदं हंति चिरोत्थमपि दारुणम् ॥ २४७ ॥

अर्थ-धत्तूरेके पत्ते, अरंडकी जड, संभावृक्षकी छाल, सांठकी जड, सहजनेवृक्षकी छाल इनको पानीमें पीस लेप करनेसे चिरकालका कठिनभी पीलपाँवरोग दूर होता है ॥ २४७ ॥

इति श्लीपदस्य चिकित्सा

अथ विद्रधिरोगस्यानुभूतचिकित्सा

सौभाञ्जनकनिर्यूहो हिंगुसैन्धवसंयुतः ।
हन्त्यन्तर्विद्रधिं शीघ्रं प्रातःप्रातर्विशेषतः ॥ २४८ ॥

अर्थ- सहजनेकी छालका काढा हींग, सेंधानमक मिलाकर प्रातःकाल पानीसे शीघ्रही विद्रधिरोग अर्थात् शरीरमें जो मोटे २ चकत्ते लाल पड़ जातेहैं वह शीघ्रही नष्ट होते हैं ॥ २४८ ॥

अन्यच्च

रक्तचन्दनमंजिष्ठानिशामधुकगैरिकैः ।
क्षारेण विद्रधौ लेपो रक्तागन्तुनिमित्तके ॥ २४९ ॥

अर्थ–लालचन्दन, मंजीठ, हलदी, मुलहटी, गेरू, इनका चूर्णकर सज्जीखार या जवाखार मिलाकरलेपकरनेसे भीतरका और बाहरका विद्रधिरोग अर्थात् शरीरमेंमोटे २ लाल २ दादोंका पडना खुजली आदिक रोग दूर होते हैं ॥ २४९ ॥

इति विद्रधिरोगस्य चिकित्सा

अथ व्रणशोथस्यानुभूतचिकित्सा

तिलसैन्धवयष्ट्याह्वनिम्बपत्रनिशायुगैः ।
त्रिवृद्घृतयुतैः पिष्टैः प्रलेपो व्रणशोधनः ॥ २५० ॥

अर्थ–काले तिल, सेंधानमक, यष्टी, नीमके पत्ते, दारुहलदी औ हलदी और निसोथ इनको पीसकर घीमें मिलाकर गरम करके लेपकर नेसे व्रण अर्थात् फोडा साफ होता है ॥ २५० ॥

अन्यच्च

एकं वा सारिवामूलं सर्वव्रणविशोधनम् ।
निम्बपत्र-तिला दन्ती त्रिवृत्सैन्धवमाक्षिम् ।
दुष्टव्रणप्रशमनो लेन्तः शोधनकेशरी ॥ २५१ ॥

अर्थ–केवल सारिवावृक्षकी जडको पीसकर लेप करनेसे सबप्रकारके व्रण अर्थात् फोडे दूर होते हैं। अथवा नीमके पत्ते, तिल,जमालगोटेकी जड,निसोत, सेंधानमक इनको पीसकर सहत मिलायकर लेप करनेसे दु फोडे भी शान्त होते हैं और फोडोंके साफ करनेमें यह श्रेष्ठ है ॥२५१॥

अन्यच्च

लेपान्नि-बदलैः कल्को व्रणशोधनरोपणः ॥ २५२ ॥

अर्थ–नीमके पत्तोंको पीसकर फोडोंके बाँधनेसे फोडे साफ होजाते हैं और भरजाते हैं ॥ २५२ ॥

अन्यच्च

यवचूर्णं समधुकं सतैलं सह सर्पिषा ।
दद्यादालेपनं कोष्णं दाहशूलोपशान्तये ॥ २५३ ॥

अर्थ–जौका चून, सहत और तैल, घी मिलाकर कुछ गरम करके लेप करनेसे व्रणमें जो दाह और शूल हैं वे नष्ट होते हैं ॥ २५३ ॥

अन्यच्च

मनःशिला समंजिष्ठा सलाक्षा रजनीद्वयम् ।
प्रलेपः सघृतक्षौद्रस्त्वचःसावर्ण्यकृत्स्मृतः ॥ २५४ ॥

अर्थ--मैनशिल, मंजीठ, लाख, दारुहलदी और हलदी, इनको पीसकर घी और सहतमें मिलाकर लेप करनेसे शरीरकी खालको साफ करदेता है ॥ २५४ ॥

इति व्रणरोगस्य चिकित्सा

अथ नाड़ीव्रणस्यानुभूतचिकित्सा

गुग्गुलुस्त्रिफलाव्योषैः समांशैराज्ययोजितः ।
नाडीदुष्टव्रणशूलभगन्दरविनाशनः ॥ २५५ ॥

अर्थ--शुद्धगूगल, हैड़ बहेडा आँवला, इन औषधियोंको समानभाग लेकर चूर्ण कर चूर्णके बराबर घी लेकर उसमें मिलाकर सेवन करनेसे नाड़ीव्रण अर्थात् नासूर, शूल, भगन्दररोगादि दूर होते हैं ॥ २५५ ॥

अन्यच्च

हंसपाद्यरिष्टपत्रं जातीपत्रं ततो रसैः ।
तत्कल्कैश्चपचेत्तैलं नाडीव्रणविशोधनम् ॥ २५६ ॥

अर्थ--हंसराज; नीमके पत्ते, चमेलीके पत्ते, इनका रस तैलमें मिलाकर पकाकर लगानेसे नाड़ीव्रण अर्थात् नासूररोग साफ होता है ॥ २५६ ॥

इति नाडीव्रणस्य चिकित्सा

अथ भगन्दररोगस्यानुभूतचिकित्सा

वटपत्रेष्टकाशुंठीसगुडूचीपुनर्नवाः ।
सुपिष्टाः पिडकावस्थे लेपः शस्तो भगन्दरे ॥ २५७ ॥

अर्थ- बडके पत्ते, ईंटका चूर्ण, सोंठ, गिलोय, सांठकी जड, इनको पीसकर भगन्दर रोगमें लेप करनेसे भगन्दररोग अर्थात् गुदाके मुँहसे दो अंगुल दूरपर एक फुंसी होजाती है वह इस लेपसे दूरहोतीहै ॥ २५७ ॥

अन्यच्च

त्रिफलारससंयुक्तं बिडालास्थिप्रलेपनम् ।
भगन्दरं निहन्त्याशु दुष्टव्रणहरं परम् ॥ २५८ ॥

अर्थ- हैड वहेड़ा, आँवला इनका रस और बिलावकी हड्डी पीसकर लेप करनेसे जल्दीही भगन्दररोग और फोडेआदि रोग दूरहोतेहैं॥२५८॥

अन्यच्च

सुमनावटपत्राणि गुडूची विश्वभेषजम् ।
ससैन्धवस्तक्रपिष्टो लेपो हन्ति भगन्दरम् ॥ २५९ ॥

अर्थ--चमेलीके पत्ते, और बडके पत्ते, गिलोय, सोंठ, सेंधानमक इनको छाछमें पीसकर लेप करनेसे भगन्दरपिटका नष्ट होती है ॥२५९॥

अन्यच्च

तिलाभया लोध्रमरिष्टपत्रं निशे वचा कुष्ठमगारधूमः ॥
भगन्दरे नाड्युपदंशयोश्च दुष्टव्रणे शोधनरोपणोऽयम्॥

अर्थ--तिल, हैड़, पठानी लोध, नीमके पत्ते, दारुहलदी, हलदी वच, कूठ, घरका धूवाँ इनको मिलाकर लेप करनेसे भगन्दररोग, नासूर, गरमीका रोग फोडा आदि रोगसाफ होते हैं और घाव भर, जाता है ॥ २६० ॥

इति भगन्दररोगस्य चिकित्सा

अथोपदंशरोगस्यानुभूतचिकित्सा

पटोलनिम्बत्रिफलागुडूचीक्राथंपिबेद्धाखदिराशनाभ्यां ।
सगुग्गुलुंवात्रिफलायुतंवासर्वोपदंशापहरः प्रयोगः॥ २६१ ॥

अर्थ--पटोलपत्र, नीमकी छाल, हैड-बहेडा-आँवला, गिलोय इन औषधियोंका काढ़ा कर उसमें कत्था और विजैसार मिलाकर पीनेसे अथवा शुद्ध गूगल वा त्रिफलेका चूर्ण मिलाकर सेवन करनेसे उपदंश रोग अर्थात् गरमी आतशकका रोग दूर होता है ॥ २६१ ॥

अन्यच्च

त्रिफलायाः कषायेण भृंगराजरसेन वा ।
व्रणप्रक्षालनं कुर्य्यादुपदंशप्रशान्तये ॥ २६२ ॥

अर्थ--हैड-बहेडा-आँवला इनका काढा कर वा भंगरेके रसकरके गरमीसे इन्द्रीआदिपर जो फुन्सियां या घाव होते हैं वे धोनेसे दूर होते हैं ॥ २६२ ॥

अन्यच्च

दहेत्कटाहे त्रिफला सा मसी मधुसंयुता ।
उपदंशे प्रलेपोऽयं सद्यो रोपयति व्रणम् ॥ २६३ ॥

अर्थ–हैड़ बहेडा-आँवला इनको कढाहीमें जलाकर भस्म घरलेवे । उस राखको सहतमें मिलाकर उपदंश अर्थात् गरमी आतशकको जो फुंसियाँ, घाव होजाते हैं उनपर लगानेसे जल्दीही नष्ट होते हैं ॥ २६३ ॥

अन्यच्च

करवीरस्य मूलेन परिपिष्टेन वारिणा ।
असाध्यापि निवर्तेत लिंगोत्था रुक्प्रलेपनात् ॥२६४॥

अर्थ--कनेरकी जड़को जलमें पीसकर लेप करनेसे इन्द्रीमें गरमीसे हुई जो असाध्यभी फुंसियाँ वह भी दूर होती हैं ॥ २६४ ॥

इत्युपदंशरोगस्य चिकित्सा

अथ कुष्ठरोगस्यानुभूतचिकित्सा

मंजिष्ठात्रिफलातिक्तावचादारुनिशाभया: ।
निम्बश्चैषां कृतः क्वाथः सर्वं कुष्ठं विनाशयेत् ॥ २६५ ॥

अर्थ–मंजीठ, हैड़, बहेडा, आँवला, कुटकी, देवदारु, हलदी, हैड़क बक्कल, नीमकी छाल इन औषधियोंका काढा सब प्रकारके कुष्ठोंको दूर करता है ॥ २६५ ॥

अन्यच्च

पथ्याकरंजसिद्धार्थ निशावल्गुजसैन्धवैः ।
विडङ्गसहितैः पिष्टैर्लेपो मूत्रेण कुष्ठनुत् ॥ २६६ ॥

अर्थ–हैड़, करंजुवा, सरसों, हलदी, बावँची, सेंधानमक, वायविडं इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे सबप्रकारके कुष्ठ अर्थात् को दूर होते हैं ॥ २६६ ॥

अन्यच्च

सोमराजीभवं चूर्णं शृङ्गवेरसमन्वितम् ।
उद्वर्त्तनमिदं हन्ति कुष्ठमुग्रं कृतास्पदम् ॥ २६७ ॥

अर्थ–बावचीका चूर्ण कर उसमें सोंठका चूर्ण मिलाकर मालिश करनेसे मुँह पैरआदि पर हुआ जो कुष्ठ (कोढ) वह दूर होताहै॥२६७॥

अन्यच्च

कुष्ठं क्रिमिघ्नो दद्रुघ्नो निशासैन्धवसर्षपाः ।
अम्लपिष्टाः प्रलेपोऽयं दद्रुकुष्ठनिषूदनः ॥ २६८ ॥

अर्थ–कूठ, वायविडंग, पवाडके बीज, हलदी, सेंधानमक, सरसों इनकी इनको काँजीमें पीसकर लेप करनेसे दाद, कुष्ठ नष्ट होते हैं ॥ २६८ ॥

अन्यच्च

विडंगत्रिफलाकृष्णाचूर्णं लीढं सामाक्षिकम् ।
हन्ति कुष्ठं क्रिमीन्मेहान्नाडीव्रणभगन्दरम् ॥ २६९ ॥

अर्थ--वायविडंग, हैड-बहेडा- आंवला, पीपल इनका चूर्ण सहत मिलायकर सेवन करनेसे प्रमेह, नासूर, भगन्दर, कुष्ठ (कोढ), पेटमें कीडोंका होना आदि रोग नष्ट होते हैं ॥ २६९ ॥

अन्यच्च

मरिचं त्रिवृता मुस्तं हरितालं मनःशिला ।
देवदारु हरिद्रे द्वे मांसी कुष्ठं सचन्दनम् ॥ २७० ॥

विशाला करवीरश्च क्षीरमर्कसमुद्भवम् ।
गोमयश्च रसं कुर्यात्प्रत्येकं कर्षसम्मितम् ॥ २७१ ॥
विषस्यार्द्धपलं देयं तैलं प्रस्थमितं कटु ।
पचेच्चतुर्गुणे नीरे गोमूत्रे द्विगुणे तथा ॥ २७२ ॥
मरिचाद्यमिदं तैलमभ्यङ्गात्कुष्ठनाशनम् ।
एतस्याभ्यङ्गतः श्वित्रं विवर्णं तत्क्षणाद्भवेत् ॥ २७३ ॥
तैलमेतज्जयेत्कंडूं पामासिध्मविचर्चिकाम् ।
पुंडरीकं तथा दद्रूं शून्यतां नित्यसेविनाम् ॥ २७४ ॥

अर्थ–कालीमिरच, निसोत, नागरमोथा, हरताल, मैनशिल, देवदारु, हलदी, दारुहलदी, जटामांसी, कूठ, लालचन्दन, इन्द्रायणकी जड, कनेरका दूध और आकका दूध इन औषधियोंको एक २ तोला लेना । गोबरका रस १ सेर मीठा तेलिया २ तोला, सरसोंका तेल एक १ सेर, जल ४ चार सेर, गोमूत्र दो २ सेर इन सब औषधियोंको जलमें भिजोदेवे फिर काढा करे उस काढेको और तेलको और गोमूत्रको कढाईमें पकावे जब तैलमात्र रहजावे तब उतार लेवे यह मरिचादि तैल कहाता है इसके मलनेसे सब प्रकारके कुष्ठ दूर होते हैं इसके मलनेसे सफेद कोढ शीघ्र ही नष्ट होता है । यह तैल खाज, पामा, सिध्म विचर्चिका, पुण्डरीक, दादआदि कुष्ठोंको रोज मालिश करनेसे शीघ्रही नष्ट कर देता है ॥ २७०–२७४ ॥

इति कुष्ठरोगस्य चिकित्सा

अथ शीतपित्तोदर्दकोठरोगस्य चिकित्सा

शीतपित्ते तु वमनं पटोलारिष्टवासकैः ।
अभ्यङ्गः कटुतैलेन सेकश्चोष्णेन वारिणा ॥ २७५ ॥

अर्थ--शीतपित्तरोगमें अर्थात् जिसको पित्त उछलना कहते हैं उसमें पटोलपत्र और नीमकी छाल वासा इनका काढा करके वमन (कय) करवानी चाहिये अथवा कडवे तैलकी मालिश करनी चाहिये वा गरम जलकी भापसे सेकना हित है ॥ २७५ ॥

अन्यच्च

आर्द्रकस्य रसः पेयः पुराणगुडमिश्रितः ।
शीतपित्तापहः श्रेष्ठो वह्निमान्द्यविनाशनः ॥ २७६ ॥

अर्थ--अदरकके रसमें पुराना गुड मिलाकर पीनेसे शीतपित्तरोग नष्ट होता है और अग्निमन्दता भी दूर होती है ॥ २७६ ॥

इति शीतपित्तस्य चिकित्सा

अथाम्लपित्तरोगस्यानुभूतचिकित्सा

यवकृष्णापटोलानां क्वाथं क्षौद्रयुतं पिबेत् ।
नाशयेदम्लपित्तञ्च ह्यरुचिं च वमिं तथा ॥ २७७ ॥

अर्थ-इन्द्रयव, पीपल, पटोलपत्र इनका काढा बनाकर पीनेसे अम्लपित्त रोग, अरुचि, वमन, कयका आना आदि रोग नष्ट होते हैं ॥ २७७ ॥

अन्यच्च

पथ्याभृङ्गरजश्चूर्णं युक्तं जीर्णगुडेन तु ।
जयेदम्लपित्तजन्यां छर्दिमन्नविदाहजाम् ॥ २७८ ॥

अर्थ--हैडका वक्कल, सूखे भङ्गरेका चूर्ण दोनोंको बराबर लेकर गुड़ मिलाकर सेवन करनेसे अम्लपित्त रोग, छर्दि (कय) आना, अन्नका न पचना आदि रोग शान्त होते हैं ॥ २७८ ॥

अन्यच्च

पिप्पलीमधुसंयुक्ता चाम्लपित्तविनाशनी ॥ २७९ ॥

अर्थ--पीपलका चूर्ण सहत मिलाकर चाटनेसे अम्लपित्तरोग दूर होता है ॥ २७९ ॥

इत्यम्लपित्तस्य चिकित्सा

अथ विसर्परोगस्य चिकित्सा

भूनिम्बवासाकटुकापटोलफलत्रिकाचन्दननिम्बसिद्धः
विसर्पदाहज्वरवक्त्रशोषविस्फोटतृष्णावमिनुत्कषायः ॥

अर्थ- चिरायता, वांसा, कुटकी, पटोलपत्र, हैड बहेड़ा-आंवला, लाल-चन्दन, नीमकी छाल इनका काढा पीनेसे विसर्परोग, दाह, ज्वर, मुँहका सूखना, फोड़ा, प्यासका लगना आदि रोग नष्ट होते हैं ॥२८०॥

मुस्तारिष्टपटोलानां क्वाथःसर्वविसर्पनुत् ॥ २८१ ॥

अर्थ--नागरमोथा, नीमकी छाल, पटोलपत्र इनका काढा सब प्रकारके विसर्परोगको दूर करता है ॥ २८१ ॥

अन्यच्च

रास्ना नीलोत्पलं दारु चंदनं मधुकं बला ।
घृतक्षीरयुतो लेपो वातवीसर्पनाशनः ॥ २८२ ॥

अर्थ--रास्ना, नीलोफल, देवदारु, लालचंदन, मुलहटी, गंगेरनकी छाल, घी और दूध मिलाकर लेप करनेसे वायुका विसर्परोग दूर होता है ॥ २८२ ॥

अन्यच्च

मृणालं चंदनं लोध्रमुशीरं कमलोत्पलम् ।
सारिवामलकं पथ्या लेपः पित्तविसर्पनुत् ॥ २८३ ॥

अर्थ- कमलककड़ी, लालचंदन, पठानीलोध, खस, कमलके फूल, सारिवा, आंवले, छोटी हैड इनको बराबर लेकर पानीमें पीस लेप करनेसे पित्तका विसर्प रोग दूर होता है ॥ २८३ ॥

अन्यच्च

त्रिफलापद्मकोशीरसमंगाः करवीरकम् ।
नलमूलमनंता च लेपः श्लेष्मविसर्पहा ॥ २८४ ॥

अर्थ--हैड-बहेडा-आँवला, पदमाख, खस, धायके फूल, करनेकी छाल, नरसलकी जड़, जवासा इनको बराबर लेकर पानीमें पीसकर लेप करनेसे कफका विसर्परोग दूर होता है ॥ २८४ ॥

इति विसर्परोगस्य चिकित्सा

अथ मुखरोगस्यानुभूतचिकित्सा

दन्तचाले तु गंडूषो बकुलत्वक्कृतो हितः ।
माक्षिकं पिप्पलीसर्पिर्मिश्रितं धारयेन्मुखे ।
दन्तशूलहरं प्रोक्तं प्रधानमिदमौषधम् ॥ २८५ ॥

अर्थ–मौलसिरीकी छालका काढा कर उसके कुल्ले करनेसे हिलते हुए दांत मजबूत होते हैं। पीपलका चूर्ण और सहत, घी मिलाकर मुखमें रखनेसे दाँतोंका दर्द दूर होता है ॥ २८५ ॥

कटुकातिविषादारुपाठामुस्तकलिङ्गकाः ।
गोमूत्रक्कथिताः पेयाः कंठरोगविनाशनाः ॥ २८६ ॥

अर्थ–कुटकी, अतीस, देवदारु, पाठा, नागरमोथा, इन्द्रयव इनका काढा कर गोमूत्र मिलाकर पीनेसे कंठके रोग दूर होते हैं ॥ २८३ ॥

जातीपत्रामृताद्राक्षायासदार्वीफलत्रिकैः ।
क्वाथः क्षौद्रयुतःशीतो गंडूषो मुखपाकनुत् ॥ २८७ ॥

अर्थ--चमेलीके पत्ते गिलोय, जवासा, दारुहलदी, हैड-बहेड़ा-आँवला इन औषधियोंका काढा कर उसमें सहत मिलाकर कुल्ले करनेसे मुखका पकना आदि रोग दूर होते हैं ॥ २८७ ॥

अन्यच्च

कृष्णाजीरककुष्ठेन्द्रयवानां चूर्णतस्त्यहात् ।
मुखपाकव्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ॥ २८८ ॥

अर्थ–कालाजीरा, कूठ, इन्द्रयव इन तीनोंका चूर्ण मुखमें धारण करनेसे मुखका पकना, दुर्गंधि आना, बडे २ छालोंका होना, कफका आना दूर होता है ॥ २२८ ॥

इति मुखरोगस्य चिकित्सा

अथ कर्णरोगस्यानुभूतचिकित्सा

शृंगवेरञ्च मधु च सैन्धवं तैलमेव च।
कदुष्णं कर्णयोर्देयमेतद्धा वेदनापहम् ॥ २८९ ॥

अर्थ-अदरकका अर्क, सहत और सेंधानमक, तैल इन सबको मिलाकर कुछ गरम करके कानमें डालनेसे कानकी पीडा दूर होती है ॥ २८९ ॥

अन्यच्च

तीव्रशूलान्विते कर्णे सशब्दे क्लेदवाहिनि।
वस्तमूत्रं क्षिपेत्कोष्णं सैन्धवेनावचूर्णितम् ॥ २९० ॥

अर्थ-बकरेके मूत्रमें सेंधानमक मिला कुछ गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द शब्दका होना रादका बहना आदि रोग दूर होते हैं ॥ २९० ॥

अन्यच्च

हरितालं सगोमूत्रं पूरणं पूतिकर्णजित् ॥ २९१ ॥

अर्थ--हरतालका चूर्ण गोमूत्रमें मिलाकर कानमें डालनेसे रादका बहना दुर्गंधिका आना आदि दूर होते हैं ॥ २९१ ॥

अन्यच्च

सद्यो मद्यं निहंत्याशु कर्णकीटं सुदारुणम्।
सद्यो हिंगु निहंत्याशु कर्णकीटं सुदारुणम् ॥ २९२ ॥

अर्थ-हींग और मद्य इन दोनोंमेंसे कोईसी एकवस्तु कानमें डालनेसे कानके कीडे मर जाते हैं ॥ २९२ ॥

अन्यच्च

पीतार्कपत्रमाज्येन लिप्तमग्नौ प्रतापयेत् ।
तद्रसः श्रवणे क्षिप्तः कर्णशूलहरः परः ॥ २९३ ॥

अर्थ--आकके पीले पत्तोंमें घी लगाकर आँचमें गरम कर उसका रस निकालके कानमें डालनेसे कानका दर्द आदि रोग नष्ट होते हैं ॥२९३॥

इति कर्णरोगस्य चिकित्सा

अथ नासारोगस्यानुभूतचिकित्सा

विल्वपत्ररसैः सिद्धं तैलं स्यात्पूतिनस्यनुत् ॥ २९४ ॥

अर्थ-बेलपत्रके रसमें तिलका तैल मिलाकर पकानेसे उसको नाकमें डालनेसे नाकसे दुर्गंधिआदिका निकलना दूर होता है ॥ २९४ ॥

अन्यच्च

पिप्पल्यः शिग्रुबीजानि विडङ्गमरिचानि च ।
अवपीडः प्रशस्तोऽयं प्रतिश्यायनिवारणे ॥ २९५ ॥

अर्थ-पीपल, सहजनेके बीज, वायविडंग, कालीमिरच इनका चूर्ण कर सूंघनेसे जुकामआदि दूर होते हैं ॥ २९५ ॥

शेषाणान्तुविकाराणांयथास्वंस्याच्चिकित्सितम् ॥ २९६ ॥

अर्थ- और सब विकारोंकी यथादोष चिकित्सा करनी ॥ २९६ ॥

इति नासारोगाणां चिकित्सा

अथ नेत्ररोगाणामनुभूतचिकित्सा

सैन्धवदारुहरिद्रा गैरिकपथ्थारसाञ्जनैःपिष्टैः ।
दत्तो बहिः प्रलेपो भवत्यशेषाक्षिरोगहरः ॥ २९७ ॥

अर्थ--सेंधानमक, दारुहलदी, गेरू, हैड़, रसोत, इनको पीस आंखोंके बाहर लेप करनेसे सब प्रकारके आंखोंके रोग दूर होते हैं ॥ २९७ ॥

यस्त्रैफलं चूर्णमपथ्यवर्जी सायंसमश्नाति हविर्मधुभ्याम्
समुच्यतेनेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीणधनोमनुष्यः ॥२९८॥

अर्थ--जो मनुष्य हैड, बहेडा, आंवला, इनका चूर्ण सायंकाल सहत और घी मिलाकर खाता है और पथ्यसे रहता है वह सब प्रकारके आंखोंके रोगोंसे छूट जाता है । जैसे धनहीन मनुष्य नौकरोंसे छूट-जाता है ॥ २९८ ॥

अन्यच्च

भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यत्प्रदीयते ।
अचिरेणैव तद्वारि तिमिराणि व्यपोहति ॥ २९९ ॥

अर्थ--भोजनके बाद हाथ धोकर दोनों हथेलियोंको आपसमें रगड़-कर आंखोंके लगानेसे थोड़ेही कालमें वह आंखोंके लगाहुआ जल तिमिर अर्थात् आंखोंके अगाडी अँधेरासा आना दूर होता है ॥ २९९ ॥

अन्यच्च

अञ्जनं श्वेतमरिचं पिप्पली मधुयष्टिका ।
विभीतकस्य मध्यन्तु-शंखनाभिर्मनःशिला ॥ ३०० ॥

एतानि समभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत् ।
छायाशुष्कां कृतां वर्तिं नेत्रेषु च प्रयोजयेत् ॥ ३०१ ॥

अर्थ–सुरमा, सफेद मिरच, पीपल, मुलहटी बहेड़ेकी गिरी, शंखकी नाभि, मैनशिल, इन सबको बराबर लेकर बकरीके दूधमें पीसकर गोली कर छायामें सुखालेवे । इन गोलियोंको आंखोंमें लगानेसे सब प्रकारके आंखोंके रोग दूर होते हैं ॥ ३००--३०१ ॥

त्रिफलायाः कषायन्तु धावनान्नेत्ररोगजित् ॥ ३०२ ॥

अर्थ–त्रिफला (हैड़ बहेड़ा आँवलाइन) का काढा कर आँखोंको धोनेसे आँखोंके सब विकार दूर होते हैं ॥ ॥ ३०२ ॥

अञ्जनम्

शुद्धे नागे द्रुते तुल्यं शुद्धं सूतं विनिःक्षिपेत् ।
कृष्णांजनं तयोस्तुल्यं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ॥ ३०३ ॥
दशमांशेन कर्पूरं तस्मिश्चूर्णे प्रदापयेत् ।
एतत्प्रत्यञ्जनं नेत्रगदजिन्नयनामृतम् ॥ ३०४ ॥

अर्थ–शीशेको शुद्ध करके अग्निपर पतला कर और शीशेके बराबर शुद्ध पारा लेकर उस तपेहुवे शीशीमें मिलादेवे फिर इन दोनोंकी बराबर शुद्ध सुरमा मिलादेवे फिर इन सबका चूर्ण कर चूर्णका दशवां हिस्सा कपूर मिलादेवे इसके लगानेसे सब नेत्रोंके विकार दूर होते हैं । यह अंजन नेत्रोंमें अमृतके समान गुण करता है ॥ ३०३ ॥ ३०४ ॥

इति नेत्ररोगाणां चिकित्सा

अथ शिरोरोगाणामनुभूतचिकित्सा

गुडनागरकल्कस्य नस्यं मस्तकशूलनुत् ॥ ३०५ ॥

अर्थ–गुड़ और सोंठको पीसकर नाकमें सूंघनेसे मस्तकका दर्द दूर होता है ॥ ३०५ ॥

एरंडमूलं तगरं शताह्वा जीवन्तिका रास्निकसैन्धवे च ।
भृङ्गंविडङ्गंमधुयष्टिकाचविश्वौषधं कृष्णतिलस्यतैलम् ॥३०६॥
अजापयस्तैलविमिश्रितञ्च चतुर्गुणं भृङ्गरसेविपक्वम् ।
षड्बिन्दवश्चैवनसिप्रदेयाः सर्वान्निहिन्युःशिरसोविकारान् ॥३०७॥

अर्थ–अरंडकी जड़, तगर, शतावर, जीवन्ती, रास्ना, सेंधानमक, भारंगी, वायविडंग, मुलहटी, सोंठ, कालेतिलका तैल, बकरीका दूध इन सबसे चारगुणा भंगरेका रस सबको मिलाकर पकाना जब तैलमात्र रहजावे तब उतारलेना यह षड्बिन्दुतैल सबप्रकारके शिरोविकारोंको दूर करता है ॥ ३०६ ॥ ३०७ ॥

अन्यच्च

सशर्करं कुंकुममाज्यभृष्टं नस्यंविधेयंपवनासृगुत्थे ।
भ्रूशंखकर्णाक्षिशिरोर्द्धशूले दिनाभिवृद्धिप्रभवेचरोगे ॥३०८॥

अर्थ–खाँड और केशरको घीमें भूनकर नाकमें सूंघनेसे वायु औ खूनकी व्याधि तथा कनपटी, भौं, कान, आंख, मस्तक, आदिका दर्द तथा आधाशीशीका दर्द दूर होता है ॥ ३०८ ॥

अन्यच्च

पथ्याक्षधात्रीरजनीगुडूचीभूनिम्बनिम्बैःसगुडःकषायः
भ्रूशंखकर्णाक्षिशिरोऽर्द्धशूलंनिहन्तिानासानिहितः क्षणेन॥३०९

अर्थ–हैड बहेडा आंवला, हलदी, गिलोय, चिरायता, नीमकी छाल और गुड़ इन सबका काढा मस्तक शिरोरोगादिको नष्ट करताहै ॥३०९

अन्यच्च

आर्द्रं यच्छुक्तिकाचूर्णं चूर्णितं नवसादरम् ।
उभयं योजितं तस्य गन्धान्नश्यति शीर्षरुक् ॥ ३१० ॥

अर्थ–सीपी और नवसादर दोनोंको अच्छी तरह पीसकर थोड़ासा जल मिलाकर नाकमें सूंघनेसे मस्तकका दर्द जलदी दूर होता है ॥ ३१० ॥

इति शिरोरोगाणां चिकित्सा

अथ प्रदरादिरोगाणामनुभूतचिकित्सा

धात्रीचपथ्याचरसाञ्जनञ्चसंर्वविचूर्ण्यसजलं निपीतम् ।
अनन्तरक्तस्त्रवमुग्रवेगंनिवारयेत्सेतुरिवाम्बुवेगम् ॥ ३११ ॥

अर्थ--आंवले, हैड, रसोत, इनका चूर्ण कर जलके साथ सेवन करनेसे ज्यादे खूनका गिरना सर्वप्रकारके प्रदर रोगोंको यह प्रयोग दूर करताहै जैसे जलके वेगको पुल बांध देता है ॥ ३११ ॥

अन्यच्च

आखुपुरीषस्फटिका नागकेशराणां चूर्णम् ।
मधुसहितंसर्वप्रदररोगेयोगोऽयं बहुवारेणह्यनुभूतः ॥३१२॥

अर्थ- मूसेकी मँसगन, फटकरी, नागकेशर इनका चूर्ण सहत मिलाकर सेवन करनेसे सब प्रकारका प्रदर रोग दूर होताहै यह बहुतवार अजमाया है ॥ ३१२ ॥

इति प्रदररोगस्य चिकित्सा ।

अथ बालरोगस्यानुभूतचिकित्सा

शृंगींसमुस्तातिविषांविचूर्ण्यलेहंविदध्यान्मधुनाशिशूनां ॥
कासज्वरच्छर्दिभिरर्दितानांसमाक्षिकश्चातिविषांतथैकाम् ॥३१३

अर्थ-काकड़ासिंगी, अतीस, नागरमोथा इनका चूर्ण सहत मिलाकर बालकोंको चटानेसे खाँसी, ज्वर छर्दि, आदि रोग दूर होतेहैं । तथा केवल अतीसकोही सहत मिलाकर चटानेसे यह रोग दूर होतेहैं ॥३१३॥

अन्यच्च

नागरातिविषामुस्तं बालकेन्द्रयवैः शृतम् ।
कुमारं पाययेत्प्रातः सर्वातीसारनाशनम् ॥ ३१४ ॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला, इन्द्रयव इनका काढा कर प्रातःकाल बालकोंको पिलानेसे सबप्रकारके दस्त बंद होते हैं॥३१४॥

अन्यच्च

द्राक्षायासाभयाकृष्णाचूर्णं सक्षौद्रसर्पिषा ।
लीढं श्वासं निहन्त्याशु कासञ्च तमक तथा ॥ ३१५ ॥

अर्थ–मुनक्का, जँवासा, हैड़, पीपल इनका चूर्ण सहत और घी मिलाकर बालकोंको चटानेसे बालकोंके श्वास, खाँसीआदि रोग दूर होते हैं ॥ ३१५ ॥

अन्यच्च

पुष्करातिविषाश्रृङ्गीमागधीधन्वयासकम् ।
चूर्णितं मधुना लीढं शिशूनां पञ्चकासनुत् ॥ ३१६ ॥

अर्थ–पोहकरमूल, अतीस, काकड़ासिंगी, पीपल, जँवासा इनका चूर्ण सहत मिलाकर बालकोंको चटानेसे बच्चोंकी पाँचप्रकारकी खाँसी दूर होतीहै ॥ ३१६ ॥

अन्यच्च

दाडिमस्य च बीजानि जीरकं नागकेशरम् ।
चूर्णितं शर्कराक्षौद्रलीढं तृष्णानिवारणम् ॥ ३१७ ॥

अर्थ–अनारदाना, जीरा सफेद और काला नागकेशर इनका चूर्ण मिश्री और सहत मिलाकर चटानसे बालकोंकी प्यासका ज्यादे लगना दूर होता है ॥ ३१७ ॥

अन्यच्च

पिष्टैश्छागेन पयसा दार्वीमुस्तकगैरिकैः ॥
बहिरालेपनं शस्तं शिशोर्नेत्रामयापहम् ॥ ३१८ ॥

अर्थ—दारुहलदी, नागरमोथा, गेरू इनको बकरीके दूधमें पीसकर बालकोंकी आखोंके बाहर लेप करनेसे आँखोंके रोग नष्ट होते हैं॥३१८॥

अष्टमंगलघृतम्

वचा कुष्ठं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमथापि च।
शारिवा सैन्धवश्चापि पिप्पली घृतमष्टमम् ॥ ३१९ ॥
मेध्यं घृतमिदं सिद्धं पातव्यश्च दिनेदिने।
दृढस्मृतिः क्षिप्रमेधाः कुमारो बुद्धिमान्भवेत् ॥ ३२० ॥
न पिशाचा न रक्षांसि न भूता न च मातरः।
प्रभवन्ति कुमाराणां पिबतामष्टमंगलम् ॥ ३२१ ॥

अर्थ—वच, कूठ, ब्राह्मीबूटी, सरसों, शारिवा, सेंधानमक, पीपल, घी इन औषधियोंको पीसकर जल डालकर घी पकावे, जब घी मात्र रहजावे तब उतारलेवे इस घीको बालकोंको सेवन करानेसे बालकोंके सब रोग दूर होतेहैं। तथा बालक बुद्धिमान्, चिरायु, शास्त्रोंका विचारनेवाला होताहै। भूत, प्रेत, राक्षस आदिसे पीडित नहीं होता यह यह अष्टमङ्गल घी बालकोंको बडाही हितकारक है॥ ३१९-३२१ ॥

अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाके प्रलेपनम् ॥ ३२२ ॥

अर्थ—पीपलकी छालका चूर्ण सहत मिलाकर लगानेसे बालकके मुखका पकना दूर होताहै ॥ ३२२ ॥

लाक्षादितैलम्

लाक्षारससमं सिद्धं तैलं मस्तु चतुर्गुणम्।
रास्नाचन्दनकृष्णाब्दवाजिगन्धानिशायुगैः ॥ ३२३ ॥

शताह्वदारुयष्ट्याह्वमूर्वातिक्ताहरेणुभिः ।
बालानां ज्वररक्षोघ्नमभ्यङ्गाद्बलवर्णकृत् ॥ ३२४ ॥

अर्थ- लखका रस और तिलका तैल दहीका तोड, लाखका रस और तैल बराबर हो तथा तोड इनसे चौगुना हो और रास्ना लालचन्दन पीपल नागरमोथा असगन्ध दारुहलदी हलदी शतावर देवदारु मुलहठी मूर्वा कुटकी रेणुके बीज इन औषधियोंको बराबर लेकर काढा करे फिर काढेमें तैल तोड मिलाकर पकावे जब तैल रहजाय तब उतारलेवे यह लाक्षादितैल बालकोंके सब रोगोंको दूर करताहै तथा सुन्दरताको पैदा करता है ॥ ३२३–३२४ ॥

अथ फिरंगरोगस्यानुभूतचिकित्सा

फिरङ्गसंज्ञके देशे बाहुल्येनैव यद्भवेत् !
तस्मात्फिरङ्ग इत्युक्तो व्याधिर्व्याधिविशारदैः ॥३२५॥

अर्थ–फिरंगियोंके देशमें बाहुलताकरके यह रोग होताहै अतएव इसका फिरंगरोग नाम है यह उपदंश गर्मीके रोगकाही भेद है इसमेंभी वही लक्षण मिलतेहैं जो गर्मीरोगके हैं चिकित्साभी उसीकी भाँति है ॥ ३२५ ॥

चिकित्सामाह

चोवचीनीभवं चूर्णं शाणमानं समाक्षिकम् ।
फिरंगव्याधिनाशाय भक्षयेल्लवणं त्यजेत् ॥ ३२६ ॥

अर्थ–चोवचीनीका चूर्ण चारमासे सहत मिलाकर सेवन करनेसे फिरंग रोग दूर होता है नमकको छोड़ देना चाहिये ॥ ३२६ ॥

लवणं यदि वा त्यक्तुं न शक्नोति यदा जनः ।
सैन्धवं स हि भुंजीत मधुरं परमं हितम् ॥ ३२७ ॥

अर्थ--नमक न छोड़ाजाय तो सेंधानमक खाना चाहिये और मीठा भोजन बहुत हितकारक है ॥ ३२७ ॥

इति फिरंगरोगस्य चिकित्सा

अथ धातुवृद्धिचूर्णम्

शतावरी गोक्षुरश्च बीजं च कपिकच्छुजम् ।
गांगेरुकी चातिबला बीजमिक्षुरकोद्भवम् ॥ ३२८ ॥
चूर्णितं सर्वमेकत्र गोदुग्धेन पिबेन्निशि ।
न तृप्तिं याति नारीभिश्चूर्णस्यास्य प्रभावतः ॥३२९॥

अर्थ--शतावर, गोखरू, कौंचके बीज, गंगेरनकी छाल, कंघीकी छाल, तालमखाना इन औषधियोंका चूर्ण कर रात्रिमें गौके दूधके साथ सेवन करे तो इस चूर्णके प्रभावसे स्त्रीभोगनेसे कभी इच्छाकी तृप्ती न हो ॥ ३२८–३२९ ॥

अन्यच्च

अश्वगन्धा दशपला तन्मात्रो वृद्धदारुकः ।
चूर्णीकृत्योभयं विद्वान्घृतभांडे निधापयेत् ॥ ३३० ॥
कर्षैकं पयसा पीत्वा नारीभिर्नैव तृप्यति ।
अगत्वा प्रमदां भूयो बलीपलितवर्जितः ॥ ३३१ ॥

अर्थ--असगन्ध ४० तोला, विधाराभी ४० तोला, दोनोंका चूर्ण कर चिकने पात्रमें रखदेवे एक २ तोला रोजदूधके संग सेवनकरे तो बहुतसी स्त्रियोंसेभी भोग करनेपर तृप्त नहीं हो और यदि स्त्री सेवनको

त्यागके इस चूर्णको सेवन तो अंगमें गुचलटोंका पड़ना और बालका सफेदहोना ये रोग दूर, हों बुड्ढेसे जवान हो ॥ ३३० ॥ ३३१ ॥

अथ रसोपरसानां शोधनविधिः

पारदस्य शुद्धिमाह–

इष्टिकाचूर्णचूर्णाभ्यामादौ मर्द्यो रसस्ततः ।
दध्ना गुडेन सिन्धूत्थराजिकागृहधूमकैः ॥ ३३२ ॥

अर्थ–ईंटका खोरा और चूनेमें पहिले पारेको रगडना चाहिये फिर दही गुड सेंधानमक राई घरके धूवेंमें रगड़ना चाहिये इसप्रकार शुद्ध होताहै ॥ ३३२ ॥

अन्यच्च

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैःकृतैःकषायैर्बृहतीविमिश्रितैः
फलत्रिकेणापिविमर्दितो रसोदिनत्रयंसर्वमलैर्विमुच्यते

अर्थ–घी कुँवारके गूदेमें वा चीतेकी छालके काढेमें वा लाल सरसों बडी कटेली त्रिफला इनके काढेमें पारेको खरल करनेसे पारा सब मलोंको छोड़कर तीनदिनमें शुद्ध होजाताहै ॥ ३३३ ॥

अन्यच्च

कुमार्य्या च निशाचूर्णैर्दिनं सूतं विमर्दयेत् ।
एवं कदर्थितः सूतो षंढो भवति निश्चितम् ॥३३४॥

अर्थ-घी कुँवारका गूदा और हलदीका चूर्ण दोनोंमें पारेको रगडनेसे पारा षंढत्वगतिको प्राप्त होता है ॥ ३३४ ॥

अन्यच्च

रसोनमर्दितः सूतः नागवल्लीदले स्थितः ।
सर्वदोषविनिर्मुक्तो योजयेद्रसकर्मसु ॥ ३३५ ॥

अर्थ-लहसन और पानके अर्कमें घोटाहुआ पारा सब दोषोंसे छूटजाताहै रसकर्ममें ग्रहण करना चाहिये ॥ ३३५ ॥

अथ हिंगुलस्य शोधनविधिः

मेषीक्षीरेण दरदमम्लवर्गैश्च भावितम् ।
सप्तवारान्प्रयत्नेन शुद्धिमायाति निश्चितम् ॥ ३३६ ॥

अर्थ--भेड़के दूधमें अथवा जँभीरीनिम्बूके अर्कमें सातवार सिंगरफको खरल करनेसे शुद्ध होता है ॥ ३३६ ॥

अथ गन्धकस्य शुद्धिमाह

तप्ते घृते तत्समानं क्षिपेद्गन्धकजं रजः ।
विद्रुतं गन्धकं दृष्ट्वा तनुवस्त्रे विनिक्षिपेत् ॥ ३३७ ॥
यथा वस्त्राद्विनिःसृत्य दुग्धमध्येऽखिलं पतेत् ।
एवं स गन्धकः शुद्धो सर्वकर्म्मोचितो भवेत् ॥ ३३८ ॥

अर्थ-घीको लोहेके पात्रमें गरम कर घीके बराबरही गंधकका चूर्ण डाले । जब गंधक तपजावे तो एक पात्रमें दूध लेकर उसके ऊपर एक पतलासा कपडा रखकर उस पतली हुई गन्धकको उसमें डालदेवे, दूधमें गिरीहुई गन्धकको शुद्ध जानना सब कामोंमें श्रेष्ठ है ॥ ३३७॥ ३३८॥

अथ स्वर्णमाक्षिकशोधनविधिः

माक्षिकस्य त्रयोभागा भागैकं सैंधवस्य च ।
मातुलुंगद्रवैर्वाथ जम्बीरोत्थद्रवैः पचेत् ॥ ३३९ ॥
चालयेल्लोहजे पात्रे यावत्पात्रं सुलोहितम् ।
भवेत्ततस्तु संशुद्धिःस्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ३४० ॥

अर्थ--सोनामक्खी तीनभाग सेंधानमक एक भाग इनको बिजौरेके रसमें अथवा जंभीरीनींबूके रसमें लोहेके पात्रमें पकावे और चलाता रहे । जब लोहपात्र अच्छी तरह लाल होजावे तब सोनामक्खी शुद्ध होती है ॥ ३३९ ॥ ३४० ॥

अथ मनःशिलाशुद्धिमाह

मातुलुङ्गरसैः पिष्टा जपानीरैर्मनःशिला ।
शृङ्गवेररसैर्वापि विशुध्यति मनःशिला ॥ ३४१ ॥

अर्थ--बिजोरेके रसमें अथवा भांगके रसमें वा अदरकके रसमें मैनशिलको खरल करनेसे शुद्ध होतीहै ॥ ३४१ ॥

अथ हरितालस्य शोधनविधिः

तालकं कणशः कृत्वा तच्चूर्णं काँजिके क्षिपेत् ।
दोलायंत्रेण यामैकं ततः कुष्मांडजैर्द्रवैः ॥ ३४२ ॥
तिलतैले पचेद्यामं यामं च त्रिफलाजलैः ।
एवं यंत्रे चतुर्यामं पाच्यं शुद्धयति तालकम् ॥ ३४३ ॥

अर्थ--हरतालके टुकड़े करके एक घडेमें काँजी भर हरतालके टुकडोंको उस घडेमें गेरकर पकावे । फिर ऐसेही पेठेके रस तथा तिलके

तेलमें और त्रिफलेके काढेमें पकावे चारप्रहर इस प्रकार हरतालकी शुद्धि जाननी ॥३४२॥ ॥ ३४३ ॥

अथ शिलाजतुशोधनस्य विधिः

गोदुग्धैस्त्रिफलाक्काथैर्भृंगद्रावैश्च मर्दयेत् ।
आतपे दिनमेकैकं तच्छुष्कं शुद्धतां व्रजेत् ॥ ३४४ ॥

अर्थ- गौका दूध त्रिफलेका काढा भंगरेका रस इन्होंमें एक एक दिन खरल करे और धूपमें सुखालेवे इसप्रकार शिलाजतु शुद्ध जाननी ॥ ३४४ ॥

इति शोधनाधिकार:

अथ विषोपविषाणां शोधनमाह

जैपालस्य शोधनविधिः

जैपालं रहितं त्वगंकुररसज्ञानिर्मले माहिषे
निःक्षिप्तंत्र्यहमुष्णतोयविमलं खल्वे सवासोर्दितम् ।
लिप्तं नूतनखर्परेषु विगतस्नेहं रजःसंनिभं
निंबूकाम्बुविभावित च बहुशःशुद्धंगुणाढचंभवेत् ॥३४५॥

अर्थ-जमालगोटेके बीज लेकर उनके ऊपरकी छाल उतार जो गिरीसी निकले उसमेंभी एक जीभसी होती है उसको दूर कर कपडेमें पोटली बाँधके तीन दिन भैंसके गोबरमें रक्खे चौथे दिन निकालके उन जमालगोटोंको गरम जलसे धोकर दूसरे कपडेमें बाँधकर कपडेसहित

खरल करे जब बारीकचूर्ण होजावे तब निकालकर एक खिपडेपर उसको पोत देवे तो वो चिकनाई रहित होकर धूलके समान होजावेगा फिर उसको नींबूके रसकी दो पुट देवे तो ये शुद्ध जमालगोटे विशेष गुण करनेवाले होते हैं ॥ ३४५ ॥

इति विषस्य शोधनविधिः

खंडीकृत्य विषं वस्त्रे परिबद्धं तु दोलया ।
गोमूत्रेण संस्विन्नं यामतःशुद्धिमाप्नुयात् ॥ ३४६ ॥

अर्थ--मीठे तेलियेके टुकडे कर एक कपडेमें बाँध एक घडेमें गोमूत्र भर उस पोटलीको घडेमें गेरदेवे जब मीठे तेलियेके टुकडोंमें सींकसे छेद होजावे तब शुद्ध जानना ॥ ३४६ ॥

इति विशोधनाधिकारः

इति श्रीमैराष्ट्नगरनिवासिनेन्द्रप्रस्थस्थबनवारीलालायुर्वेदविद्यालयीयपरीक्षोत्तीर्णवैद्यभूषणोपाधिधारिणा नारायणदत्तेन संग्रहीतोऽयमनुभूतयोगावलिग्रन्थः समाप्तः

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४१०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

